ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

श्रावण २०७५ अगस्त २०१८

हम नन्हे-नन्हे बच्चे हैं
नादान उमर के कच्चे हैं
पर अपनी धुन के सच्चे हैं
माता की जय जय गाएँगे
भारत की ध्वजा उड़ाएँगे
(पं. सोहनलाल द्विवेदी)

₹ २०

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

सामान्य अध्ययन

निःशुल्क परिचर्चा के साथ बैच प्रारंभ

29 अप्रैल

शाम 3:00 बजे

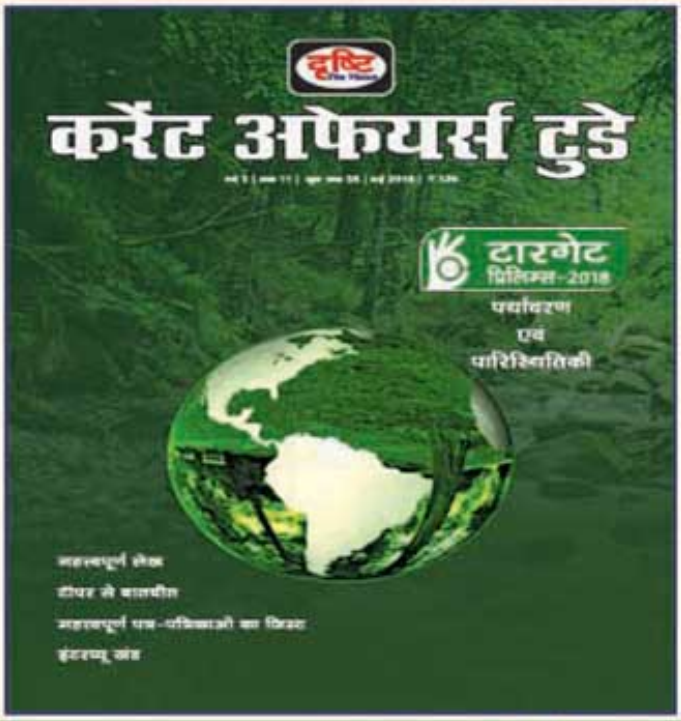

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं
अपनी लोकप्रिय वेबसाइट और यू-ट्यूब चैनल पर

www.drishtiIAS.com

Visit us: YouTube / DrishtiIAS & SUBSCRIBE

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011- 47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आषाढ़ २०७५ ▪ वर्ष ३९
अगस्त २०१८ ▪ अंक २

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या -53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

इस समय फुटबाल का बुखार पूरी दुनिया के सर चढ़कर बोलता है। वैसे भी हर बार विश्वकप के समय ऐसा ही अतिरक पूरे विश्व में दिखाई देता है। विश्व का समाचार जगत इस समय एक-एक छोटी से लेकर बड़ी घटना को अखबार, चैनल पर परोसता रहता है। इनमें कुछ तो नितांत व्यक्तिगत समाचार होते हैं। कई समाचार खोल भावना को प्रकट करने वाले तो अनेक वुसधैव कुटुम्बकम् का भाव रखने वाले भी होते हैं।

विश्व में सर्वाधिक उत्तेजना और हिंसा भर देने वाले खेल का विशेषण भी दुर्भाग्य से फुटबॉल को ही प्राप्त होता है। आज चर्चा इन नकारात्मक बातों की नहीं करनी है। इस बार फीफा विश्वकप की एक घटना ने पूरे विश्व का मन मोह लिया। जापान की टीम द्वारा खेले गए प्रत्येक मैच के पश्चात् जापान प्रशंसक पूरे स्टेडियम का कचरा अपने साथ लाई थैलियों में भरकर ले जाते थे। यह कचरा उनके द्वारा फैलाया हुआ नहीं होता था अपितु अन्य लोगों द्वारा फैलाया हुआ होता था। बात केवल यहीं नहीं रूकती थी जापान के खिलाड़ी भी अपने ड्रेसिंग रूम को पूरी तरह स्वच्छ करके ही वहाँ से बाहर होते थे। इसके बाद ये सब नवीन माध्यमों से आयोजक राष्ट्र रूस को धन्यवाद देना नहीं भूलते।

भारत के महानगरों से लेकर गांवों तक हर सड़क और हर गली-कुचे में ''स्वच्छ भारत का इरादा कर लिया हमने देश से अपने ये वादा, कर लिया हमने'' गुंजता रहता है। यूं तो भारत का जन-मन अब स्वच्छता की ओर पर्याप्त ध्यान दे रहा है परन्तु अब कभी-कभी, कहीं न कहीं छोटी-छोटी कमियाँ हमें विवश करती है कि हम स्वयं से प्रश्न पूछें- ''क्या मैंने अपना दायित्व पूरा किया?''

बच्चो! हम सब भी सुनिश्चित करें- स्वच्छता हमारी रूची ही नहीं हमारी आदत और स्वभाव बने।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- पूजा - डॉ. सेवा नन्दवाल ०५
- तिरपन - राकेश चक्र २०
- चुनमुन - शंकरदयाल भारद्वाज २४
- सच्ची मित्रता - सुकीर्ति भटनागर ३४
- हमारी भी सुनो - शकुंतला पालीवाल ४५

लघु कहानी

- रक्षाबंधन - डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' १३

अनुवाद

- जोकर वाला इरेजर - पद्मा चौगाँवकर ०८

कविता

- छोटा सैनिक - अरविन्द साहू ०६
- आय राखी का त्यौहार - डॉ. देशबन्धु शाहजहाँपुरी ०७
- आजादी - भगवतीप्रसाद द्विवेदी १७
- संरक्षक हो माटी के - डॉ. मधुसूदन साहा २३
- गुरु की महिमा - उमेशचन्द्र चौहान २५
- १५ अगस्त - रामगोपाल 'राही' ४४
- देश हुआ कैसे आजाद - शंकर सुल्तानपुरी ५१

आलेख

- घंटी की महिमा - राजेश गुजर ३७

बाल प्रस्तुति

- पेड़ - अदिति पटेल ३२
  संस्कार हैं अनमोल - योगेन्द्र साहू ४२

संवाद

- बड़ों की सुरक्षा - शंकरलाल माहेश्वरी १८

प्रसंग

- विनम्रता - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव २८
- वीर बालक नारायण - साँवलाराम नामा ३१

चित्रकथा

- दीदी की राखियाँ - देवांशु वत्स १२
- संगठन में शक्ति - देवांशु वत्स ३३
- बृहस्पति - संकेत गोस्वामी ३९

स्तंभ

- गाथा वीर शिवाजी की - १४
- संस्कृति प्रश्नमाला - १६
- कामरूप के संत साहित्यकार - डॉ. देवेनचन्द्र दास सुदामा २६
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३०
- आपकी पाती - ४७
- पुस्तक परिचय ५०

अन्य ढेरों मनोरंजक सामग्री

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

पूजा

सांत्वना दीदी के कक्षा में पहुँचते ही कुश ने पूछ लिया ''दीदी! नागपंचमी क्यों मनाई जाती है?'' ''हाँ दीदी आज सुबह हमारी कॉलोनी में बहुत सारे सपेरे घूम घूम कर पुकार रहे थे। नागदेवता को दूध पिला लो।'' सांत्वना ने बताया– '' आज नागपंचमी जो है, इस दिन नागदेवता की पूजा पौराणिक काल से होती आ रही है।'' दीदी! आज मेरी माँ ने नाग को दूध पिलाया और मैंने भी डरते हुए नाग को छू लिया–'' प्रीति ने बताया।

''चल हट नाग भी कभी दूध पीता है? मेरे पिताजी कहते हैं यह सब ढकोसला है। वे लोग उल्लू बनाते हैं।''– रजत बोला।

सांत्वना दीदी ने समझाया– देखो बच्चो! नाग को हमारे देश में देवता माना जाता है फिर वह भले ही विषधर हो पर पूजनीय है क्योंकि वह भी विविधता भरी प्रकृति का अनिवार्य हिस्सा है। वह सदियों से मनुष्य का संगी–साथी है और हमारी कृषि का रक्षक। उसकी पूजा करना यह हमारी आस्था का विषय है पर इतना तय है कि नाग पर्यावरण की शुद्धता के लिए बहुत आवश्यक हैं और जीवन में संतुलन का संदेश भी देते हैं।''

भव्या ने आश्चर्य में पड़ते पूछा लिया –''दीदी! सांप से पर्यावरण और कृषि की रक्षा कैसे होती है?''

''हमारे ऋषि मुनियों ने माना कि जितने अन्य जीव–जन्तु प्राकृतिक संतुलन के लिए उपयोगी हैं उतने ही नाग भी। कृषि प्रधान भारत में सर्प ही है जो कृषि को हानि पहुंचाने वाले जीवों पर नियंत्रण कर अन्न की सुरक्षा करते हैं। दरअसल इस मौसम में बरसात की वजह से बिलों में पानी भरने से सांप बाहर निकल आते हैं पर खेतों में खड़ी फसलों के पकने तक वे उसकी रक्षा भी करते हैं।''– दीदी सांत्वना ने विस्तार से बताया।

''दीदी! सुना है सांप, चूहों को खा जाते हैं?''– आदित्य ने पूछा।'' हाँ, साँपों से एक लाभ यह भी है कि वे चूहों से अनाज को बचाते हैं क्योंकि एक चूहा साल भर में लगभग दस किलो अनाज खा जाता है और एक बड़े गांव या शहर में चूहों की संख्या लाखों में होती है। सोच लो,

कितना नुकसान करते होंगे मूषकराज?'' सांत्वना ने समझाया।

''दीदी! यह बताइए क्या सांप सचमुच में दूध पीते हैं?''– केवल ने पूछ लिया। ''वास्तव में हमारे समाज में इस त्यौहार के बारे में बहुत सारी भ्रांतियाँ प्रचलित हैं। वर्ना वास्तविकता यह है कि नाग कभी दूध नहीं पीते।''– सांत्वना ने स्पष्ट किया। ''लेकिन हमने आज सुबह ही दूध पिलाया है।''– रजत ने प्रतिवाद किया। ''सचमुच में होता यह है कि नागों को कई दिनों तक भूखा प्यास रखा जाता है ताकि श्रद्धा के वशीभूत होकर सब लोग उसे दूध पिलाएं तो पानी की चाह में वह उसे पी ले। लेकिन दूध से उसकी आंतडियों में गहरे घाव हो जाते हैं जिससे वह दो माह से भी कम अवधि में मर जाता है।''– सांत्वना ने उसके पीछे की बात स्पष्ट कर भ्रम दूर करने की कोशिश की।

''हाँ दीदी! शायद इसलिए आजकल सांप पालना अपराध माना जाता है और पुलिसवाले सपेरों को पकड़कर जेल में बंद कर देते हैं।''– कुश ने बताया। ''वह इसलिए कि नागपंचमी के अवसर पर कमाई के चक्कर में कई सपेरे उन्हें दो महिने पहले पकड़कर उनकी विषग्रंथि को पैने चाकू से निकला देते है जिससे सांप घायल हो जाता है, दूध पिलाने से लेकर टोकनी में बंद होने तक उसे अनेक यातनाएं सहनी पड़ती हैं फलस्वरूप वह जल्दी मर जाता है इसीलिए उसे पकड़ने, पालने को अपराध की श्रेणी में लाया गया है''– सांत्वना दीदी ने विस्तार से समझाना जारी रखा।

''यह तो सचमुच उस मूक जीव के साथ बहुत बड़ी ज्यादती है।''– भव्या ने कहा। ''''और हमें उस अन्याय का प्रतिकार करना चाहिए। इसीलिए हमें ऐसे लोगों को कतई प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।'' दीदी ने कहा। ''जी दीदी! नहीं करेंगे''– समवेत स्वर गूंजा।

● इन्दौर (म.प्र.)

छोटा सैनिक

कविता : अरविन्द साहू

माँ, मैं भी सैनिक बन सीमा पर लड़ने जाऊंगा
आँख दिखायेगा जो दुश्मन, उसको मार भगाऊंगा
मेरे हाथ अभी छोटे हैं पर साहस की कमी नहीं,
तोप चलाकर बड़ी बड़ी अब्दुल हमीद कहलाऊंगा
आँख मूँद बिश्वास करो मैं भारत माँ का हूँ बेटा,
बड़े शान से बिजयी बिश्व तिरंगे को फहराऊंगा।
सागर की भीषण लहरें हों, या ऊंची पर्वत-चोटी,
बिजय का डंका कैसे बजता दुनिया को दिखलाऊंगा।

● ऊंचाहार (उ.प्र.)

कविता : डॉ. देशबन्धु 'शाहजहाँपुरी'

आया राखी का त्यौहार

झनके मन बीणा के तार।
आया राखी का त्योहार।

बड़े सबेरे वसुन्धरा ने,
सूरज को राखी बांधी।
झूम उठा मन-मन्दिर उसका,
दिया रोशनी का उपहार।
आया राखी का त्योहार।

परियों से परिधान पहनकर,
प्यारी बहनें आई हैं।
मुस्काकर कहती भैया से,
चलो चलें परियों के द्वार।
आया राखी का त्यौहार।

जूही ने गेंदा, गुलाब के,
तिलक लगा, आशीष दिया।
तब तक खुशबू बिखराना तुम,
जब तक चली न जाए बहार।
आया राखी का त्योहार।

आज लुटाया है भैया पर,
हृदय कक्ष का सारा नेह।
राखी के धागे के बदले,
केवल माँगा प्यार दुलार।
आया राखी का त्यौहार।

प्यारे भैया जग सागर में,
खेना तुम रक्षा की नाव।
दुःख की भंवर मिले यदि कोई,
छोड़ न देना तुम पतवार।
आया राखी का त्यौहार।

• शाहजहाँपुरी (उ.प्र.)

जोकर वाला इरेजर

कहानीअनुवाद : पद्मा चौगांवकर

शाला की बस से उतरा अवि तेज धूप में धीरे–धीरे घर की ओर चला। वह किसी सोच में मगन था। सीढ़ियों के पास पहुंचकर, जेब में हाथ डाला और निकाला वह जोकर वाला इरेजर।

बिल्डिंग के बच्चों की रखी सायकलों की ओट में जाकर, उसने मुट्ठी खोल वह इरेजर देखा। वह लुभावना इरेजर। जोकर की पीली कमीज, गहरे जामुनी रंग की पेंट, ऊंची–फुंदेदार टोपी और लाल सुर्ख गोल नाक। कितना प्यारा, और खुशबूदार भी!!

अथर्व ने बताया था उसके मामाजी ने अमेरिका से भेजा है, इसलिए वह और भी खास था।

एक गहरे श्वास के साथ उसने उस खुशबू को फिर महसूस किया। सीढियां चढ़ने से पहले उसने चुपचाप बैग के हवाले किया वह इरेजर। ...कहीं मां ने देख लिया तो....?

आज वह सारे काम समय से करके चार बजे खुद ही पढ़ने बैठ गया। कम्पास में पुराना इरेजर देखा तो जोकर इरेजर देखने की इच्छा हुई। ...वह...खुशबू, मन बेकाबू हो रहा था।

उसने बस्ते से इरेजर निकला ही लिया था कि ''काकी! माँ ने, अगर हो तो जामन (दूध जमाने का दही) मंगाया है।'' – विवेक भैया की आवाज थी, ''है ना!'' माँ ने कटोरी ली और रसोई घर में चली गई।

''क्यों रे! आज खेलने नहीं गया?'' विवेक ने पूछा, ''हां, पढाई कर रहा हूं। बिना किसी के कहे।''

अवि ने धाक जमाने की कोशिश की। इरेजर मुट्ठी में बंद था और चेहरे पर हलकी सी घबराहट।

विवेक हल्की सी मुस्कराहट के साथ खामोश था। अवि को वह खामोशी अच्छी नहीं लगी। उसने अनजाने ही उसके आगे मुट्ठी खोल दी– ''ये देखो!''

''अरे वाह! तेरा है या किसी का मार दिया?'' विवेक भैया के सवाल पर अवि चौंक गया। ऐसे प्रश्न की उसे उम्मीद नहीं थी।

बोला– ''मेरे दोस्त का है– लाया हूँ, हमेशा के लिए नहीं, एक दिन के लिए। बस्स.....'' अवि कुछ हकबकाया सा था।

''एक दिन के लिए?'' अवि चुप! विवेक भैया बोलता रहा– ''देख सावधान! चोर कैसे बनते हैं, पता है? पहले पेन्सिल, स्केल, पेन, इरेजर फिर गेंद फिर कुछ और... पहले छोटी छोटी चीजें फिर बड़ी... फिर और बड़ी...फिर एक दिन .....!!''

उसके हाव–भाव और इशारे! अवि सहम सा गया।

तभी जामन की कटोरी लेकर माँ आ गयी और विवेक भैया जाने लगा पर जाते–जाते एक प्रश्नार्थक दृष्टि से अवि को देखा।

सोयायटी के सारे बड़े भैया अवि से बहुत प्यार करते थे। वह भी उन्हें खूब चाहता था। तभी तो विवेक की बात उसके दिमाग में घूमती रहीं...।

आखिर रात को सोते समय उसने माँ से पूछ ही लिया...

''माँ, किसी की चीज उससे बिना पूछे ले ली तो क्या चोरी हुई?''

''और क्या?'' चोर क्या कभी पूछ–बता कर चोरी करता है? माँ ने हंस कर कहा।

''....और एक दो दिन के लिए, किसी की कोई चीज ले ली तो?'' अवि ने एक अनजान आशा और भोलेपन से पूछा।

''एक नहीं, ना दो दिन को !! बिना पूछे किसी की कोई चीज लेना ही नहीं– समझे!! क्योंकि तुम तो अच्छे हो, चोर नहीं ना?'' माँ की बात को अविने सिर डुला कर स्वीकारा।

उसका मन किया माँ से लिपट जाये और सब कुछ साफ–साफ बता दें... पर हिम्मत नहीं जुटा पाया।

बीच रात उसने एक अजीब सपना देखा, किसी सुनसान जगह पर वह अकेला भटक रहा है...और यह क्या! उसका पहनावा एकाएक बदलने लगा...विद्यालय की गणवेश की जगह काली चुस्त पेंट और काली धारी–धार टी शर्ट...आंखों पर लाल–काला चश्मा!!...जैसा चोरों को उसने तस्वीरों में देखा था।

घबराकर चिल्ला उठा–''बचाओ! मुझे बचाओ, मैं चोर होने लगा हूँ।''

जाग पड़ा तो जाना, सब कुछ सपना था। पर दिल अभी भी धक् धक् कर रहा था और शरीर पसीने से तर–बतर।

दूसरे कमरे में जाकर उसने अपने बस्ते से वह इरेजर निकाला...अब वह उसने लुभावना नहीं लग रहा था, रात की रोशनी में भदरंग सा लगा।

''...मैं चोर नहीं! न चोर बनूंगा।'' एक निश्चय था मन में।

दूसरे दिन शाला बस से उतरकर भागते हुए अवि विद्यालय में दाखिल हुआ और फिर कक्षा में पहुँचा। उसने जो सोचा था करने के लिए। जल्दी से बस्ता खोल कर वह के बीच संध (दरार) में। वह इरेजर फंस कर वह रखने वाला था। इस काम के लिए ज्यूं ही झुका, वहां कोई जोड़ी पैर देखकर चौंक गया। इरेजर हाथ में ही रह गया....सामने खड़े थे अथर्व, ईशान और कबीर और उसके हाथ में था जोकर वाला इरेजर...रंगे हाथों पकड़ा गया था अवि!

पर यह क्या! अथर्व ने खुशी दर्शाते हुए अवि के दोनों हाथ थाम लिये –''अवि दोस्त! तूने मेरा इरेजर ढूंढ निकला, कल से मिल नहीं

रहा था, मैं परेशान रहा।''

अथर्व के व्यवहार पर अवि हैरान था और ईशान और कबीर परेशान। क्योंकि वे जान चुके थे कि इरेजर अवि ने चुराया ही था।

विद्यालय में कक्षाए शुरू थी वह अवि का मन नहीं लग रहा था। क्या अथर्व को भ्रम हुआ था? उसने ऐसा व्यवहार क्यों किया?

भोजनावकाश में, अवि ने दौड़कर अथर्व को पकड़ा साहस जुटाकर सीधे सीधे बोला–

''अथर्व! मैंने तुम्हारा इरेजर ढूंढकर नहीं दिया वह मैंने चुराया था। माफ कर दो अथर्व अब मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। मुझे चोर नहीं बनना है।''

उसकी आवाज में कम्पन था, पर चेहरे पर एक पक्का निश्चय।

अथर्व के कुछ कहने से पहले, वह पलटकर कक्षा में चला गया।

कक्षा शुरू हुई अथर्व अवि के पास ही बैठा था। पर उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं थी अवि में। लिखने में उससे बार बार गलतियाँ हो रही थी। गलत को मिटाने के लिए उसने बॉक्स में अपना इरेजर देखा, शायद वह घर पर ही छूट गया था। वह परेशान था कि पास बैठे अथर्व की बंद मुट्ठी अवि की कॉपी की ओर बढ़ी और मुट्ठी खुली तो अवि ने देखा हथोली पर रखा जोकर वाला इरेजर, अवि की ओर देखकर हस रहा था और अथर्व भी तो शांत भाव से मुस्कुरा रहा था! अवि ने मन में जैसे मनों भार उतर गया।

छुट्टी के बाद अथर्व, अवि के साथ हो लिया। कंधे पर हाथ रखकर बोला–

''अवि, मैंने भी एक बार चोरी की थी, तब माँ ने सारा दिन मुझसे बात नहीं की। फिर मुझे अपने किये का बहुत दुःख हुआ और फिर मैंने ऐसा काम कभी नहीं किया। तुम अपने किये पर पछता रहे हो यही काफी है। कभी कभी कोई चीज हमें इतना लुभाती है कि हम उसे किसी भी तरह पाना चाहते हैं। तुम्हे यह इरेजर बहुत अच्छा लगा है ना?''

अवि खामोश रहा।

''दोस्त, हम एक दूसरे की चीजें काम में ले सकते हैं... फिर ऐसी नौबत नहीं आएगी। दोस्ती में मेरा, तुम्हारा क्या। सब हमारा होगा।''

अथर्व की बात में अपनापन था।

...तो अथर्व ने सब कुछ जानते हुए मेरी गलती पर पर्दा डालकर सबके सामने मुझे चोर कहलाने से बचा लिया, और मुझे माफ भी कर दिया।

अथर्व की बातें सच्चे दोस्त की सी थीं अवि के लिए में उसके लिए स्नेह उमड़ रहा था।

आज वो जोकर वाला इरेजर गलतियां मिटाते–मिटाते घिस गया...पर अवि और अथर्व की दोस्ती अभी भी अटूट है।

● गंजबासौदा (म.प्र.)

(प्रस्तुत कहानी सौ. लीना कुलकर्णी (पुणे) की मूल मराठी कहानी का हिन्दी अनुवाद है।- सं.)

उल्टे प्रश्न के सीधे उत्तर

मोहनलाल मगो

- कौनसा 'यार' जंगल में रहता है?
- कौन सा 'वार' बच्चों को भाता है?
- वह कौन सा 'तार' है जिस से सड़क बनती है?
- दर्पण में गुजरात का कौनसा शहर नजर आता है?
- किस फूल की सब्जी खाई जाती है?
- आप गत तीस फरवरी को कहां थे?
- जीवन में सबसे पहले क्या आता है?
- यदि हरे रंग की कमीज नीले समुद्र में डाले तो क्या होगा?

● दिल्ली

अखिल भारतीय स्तर पर बाल साहित्य सम्मानों हेतु आमंत्रण

आकोला। राजकुमार जैन 'राजन' फाउंडेशन, आकोला (राज.) द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर पिछले १२ वर्षों से नियमित प्रदान किये जा रहे बाल साहित्य सम्मानों २०१८ हेतु अपनी उपलब्धियों का विवरण एवं सम्मान योग्य वरिष्ठ साहित्यकारों के नामों की अनुशंसाएँ २० सितम्बर २०१८ तक सादर आमंत्रित हैं। अग्रांकित सम्मान १३वें भव्य सम्मान समारोह में प्रदान किये जाएंगे–

- **श्री राष्ट्रकवि पं. सोहनलाल द्विवेदी बाल साहित्यकार सम्मान** २१०००/–
- **डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति वरिष्ठ बाल साहित्य सम्मान** ५०००/–
- **डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति युवा बाल साहित्य सम्मान** ५०००/–
- **डॉ. श्रीप्रसाद स्मृति वरिष्ठ बाल साहित्यकार सम्मान** ५०००/–
- **डॉ. श्रीप्रसाद स्मृति युवा बाल साहित्यकार सम्मान** ५०००/–
- **डॉ. बालशौरि रेड्डी स्मृति बाल साहित्यकार सम्मान (दो, प्रत्येक)** ३१००/–
- **उत्कृष्ठ बाल पत्रिका सम्मान** ५०००/–
  (पिछले ५ वर्षों से नियमित प्रकाशित हो रही बाल पत्रिकाएं, पिछले ३ अंकों की २–२ प्रतियां भेजनी होगी।)
- **बाल साहित्य उन्नयन सम्मान** ३१००/–
  (ऐसी साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए जो कम से कम ४–६ पृष्ठ बाल साहित्य के नियमित प्रकाशित कर रहीं हैं।)
- **चन्द्र सिंह बिरकाली राजस्थानी बाल साहित्यकार सम्मान** ५०००/–
- **बाल साहित्य सृजन के लिए ११ स्मृति सम्मान (प्रत्येक)** २१००/–

उपरोक्त सम्मान हिन्दी बाल साहित्य सृजन, उन्नयन, प्रचार प्रसार के क्षेत्र में महनीय योगदान करने वाले भारत–नेपाल के चयनित रचनाकारों/पत्रिकाओं को दिया जाएगा। अतः पिछले ५ वर्षों में प्रकाशित बाल साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तक की २ प्रतियों के साथ, बाल साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों का विवरण भी संलग्न कर भेजना होगा। अपना एक ताजा रंगीन फोटो व उपलब्धियों का सप्रमाण विवरण संलग्न करें। वरिष्ठ बाल साहित्यकारों को स्वयम कोई प्रविष्टि भेजने की आवश्यकता नहीं है, प्राप्त अनुशंसाओं के आधार पर हम स्वयं संपर्क करेंगे।

सम्मान हेतु आपसे अनुशंसाएँ सादर आमंत्रित हैं जिसमें वरिष्ठ बाल साहित्यकारों का सम्पूर्ण अवदान, उनका पूरा पता व सम्पर्क सूत्र भेजिएगा।

नोट – किसी भी प्रकार की जानकारी व्हाट्सएप्प नं. ९८२८२ १९९१९ से ले सकते हैं, पर कोई, मीडिया फाइल, बायो डेटा पोस्ट न करें।

प्रविष्टियां/पुस्तकें/अनुशंसाएँ केवल राजिस्टर्ड डाक द्वारा ही भेजी जानी चाहिए। (कोरियर से नहीं)

हमारा पता –

राजकुमार जैन 'राजन'
चित्रा प्रकाशन
आकोला ३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) राजस्थान

दीदी की राखियाँ

चित्रकथा - देवांशु वत्स

रक्षाबंधन

लघु कहानी : डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'

मुरली एक गडरिया का बेटा था। वह जंगल में भेड़ बकरियाँ चराने जाया करता था। उसे बाँसुरी बजाना बहुत अच्छा लगता था। जब भेड़ बकरी घास चरती तब वह पेड़ के नीचे बैठकर मजे से बाँसुरी बजाता, तरह तरह की धुन निकालता। उसकी बाँसुरी की धुन सुनकर भेड़ बकरियाँ भी संगीत का आनंद उठाती और मुरली के पास बैठकर उसे प्यार से देखती। जब कभी कोई भेड़ बकरी चरते–चरते दूर निकल जाती या रास्ता भटक जाती तो मुरली पेड़ पर चढ़कर बाँसुरी बजाता। बाँसुरी की धुन जंगल में दूर दूर तक गूँजती। उसकी आवाज के सहारे भेड़ बकरियाँ लौट आतीं। मुरली खुशी–खुशी भेड़ बकरियाँ को लेकर घर लौट आता।

मुरली के घर के पास एक नदी बहती थी। नदी के किनारे कदम्ब का पेड़ था। पेड़ पर तरह तरह के पक्षी बसेरा करते थे। सावन का महीना था। कदंब के पेड़ में सुन्दर पीले–पीले फूल लग गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे कदंब ने पीले मखमल का कम्बल ओढ़ लिया हो। रक्षाबंधन का त्यौहार था। मुरली की कोई बहिन नहीं थी। मुरली की माँ भी उसके जन्म के कुछ दिनों बाद भगवान के घर चली गई थी। मुरली के पिता ही उसका पालन–पोषण करते थे। मुरली ५–६ बरस का ही था कि पिता भी बीमारी और गरीबी से थककर भगवान के पास चले गए। तब से मुरली दूसरों की भेड़ बकरियाँ चराता, जो मिल जाता वह खा लेता और बाँसुरी बजाता।

अब मुरली दस बरस का हो गया था। आज वह बहुत उदास था। सोच रहा था सबकी कलाई में राखी बंधी है, मेरी कोई बहिन नहीं है। मुझ गरीब को कौन राखी बाँधेगा? तभी लाल बकरी मैंऽऽ मैंऽऽ मैंऽऽ.... करती हुई मुरली के पास आई उसने अपना सिर मुरली की गोद में रख दिया। मानों वह कह रही थी कि मैं तुम्हारी बहिन बनूँगी। मुरली ने जैसे उसके मन की बात समझ ली। लाली बकरी ने एक कदम्ब का फूल उठाकर मुरली की कलाई पर धरकर उसे चूम लिया। मुरली ने लाली को बहुत प्यार किया। तब से लाली मुरली का बहुत ख्याल रखती।

एक बारी सारी भेड़ बकरियाँ जंगल में चर रही थी। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। पेड़ के नीचे बैठे–बैठे मुरली की नींद लग गई। तभी एक सर्प लहराता हुआ मुरली के पास आता हुआ दिखा। लाली बकरी ने आव देखा न ताव सर्प पर झपट पड़ी। वह उसे भगाने का प्रयास करती रही। तभी मुरली की नींद खुली। उसने देखा लाली अपने प्राणों की परवाह किये बिना मुरली की रक्षा के लिए सर्प से जूझ रही है। मुरली ने झट अपनी बाँसुरी से नागिन की धुन बजाई जिसे सुनाते हुए वह सर्प को दूर उसके बिल में ले चला गया। इस तरह लाली बहिन और मुरली भाई ने एक दूसरे के प्राणों की रक्षा कर रक्षाबंधन की लाज रखी।

● कटनी (म.प्र.)

माँ के चरणों में

भगवान कृष्ण की नगरी में दैनिक जीवन ब्राह्ममुहूर्त से ही प्रारम्भ हो जाता है, जबकि नर–नारियों की भीड़ यमुना स्नान के लिए अपने–अपने घरों से चल पड़ती है। स्नानोपरान्त मंदिरों के दर्शन के लिए भीड़ पहुंचने लगती है। ऐसे ही एक प्रातः पांच व्यक्ति मथुरा नगर में आगरा की ओर से प्रविष्ट हुए, यात्रियों में एक बालक भी था। मथुरा में रोज ही ऐसे सैकड़ों यात्री आया करते हैं अतः किसी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। वे पांचों सीधे काशी पंडित के घर की ओर चले गए। काशी पंडित घर पर ही थे, जैसे कि पहले से ही योजना बन चुकी हो, एक नाई तुरंत बुलाया गया। उसने प्रमुख यात्री का सिर और दाढी मूछें साफ कर दीं। स्नानादि के बाद सारे शरीर पर राख मली गई और संन्यासियों के गेरुए वस्त्र धारण किये गये। एक हाथ में भिक्षापात्र और दूसरे में लाठी, यह यात्री आगे की यात्रा के लिए तैयार हो गया। यह यात्री और कोई नहीं शिवाजी थे जो पिछली संध्या कुटिल औरंगजेब के बन्दीगृह से भाग निकले थे। उनकी चिन्ता यह थी कि वे सीधे रास्ते से महाराष्ट्र नहीं जाना चाहते थे। उसमें पकड़े जाने का भय था। साथ में अपने छोटे से पुत्र को रखने से संदेह किया जा सकता था और उनकी चाल की तेजी में फर्क भी आ सकता था। उन्होंने काशी पंडित से कहा कि वे शम्भाजी को उनके पास छोड़ना चाहते हैं। काशी पंडित तुरंत ही इस भार को वहन करने को तैयार हो गए। उन्होंने उस बालक को ब्राह्मण की वेशभूषा में सजा दिया। बाद में लोगों को बताया गया कि यह उनका अपना पुत्र है जो महाराष्ट्र से उनसे मिलने आया है।

शीघ्र ही शिवाजी अपने सहयोगियों को लेकर मथुरा से पूर्व की ओर चल पड़े। परन्तु तब तक उनके मुगल बन्दीगृह से भागने का समाचार प्रसारित हो चुका था सम्राट की ओर से पकड़ने के लिए इनामों की घोषणा की जा चुकी थी। अब हर नये एवं अनजान व्यक्ति को संदेह से देखा जाने लगा। एक छोटी सी बस्ती में जब ये यात्री पहुंचे तो संकट में पड़ गये। फौजदार अली कुली खाँ को शिवाजी के भागने की सूचना और उनको पकड़ने के आदेश प्राप्त हो चुके थे। अतः जैसे ही उसे पता चला कि बस्ती में कुछ नए यात्री आए हुए हैं तो उसने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। दिनभर उनकी जांच होती रही। रात में संन्यासी रूपी शिवाजी ने अकेले में फौजदर से भेंट की। बगैर किसी भूमिका के शिवाजी ने अपने को स्पष्ट कर दिया और एक लाख रूपए का एक हीरा फौजदार को भेंट किया। फौजदार ने उन्हें गिरफ्तार करने के स्थान पर हीरा लेना श्रेयस्कर समझा।

जब शिवाजी वाराणसी पहुंचे, एक बार फिर एक मुसीबत में आ घेरा। एक प्रातः जब कि अभी सूर्य नहीं निकला था, गंगा किनारे एक ब्राह्मण के पास एक अनजान व्यक्ति आया और ब्राह्मण की मुट्ठी में कुछ रख कर मुट्ठी बन्द करते हुए बोला– 'मुझे झट से स्नान करा दो, बाद में मुट्ठी खोलकर देखना।' ब्राह्मण जल्दी से उस व्यक्ति की हजामत और स्नानादि का प्रबंध करने लगा। उस समय कुछ शोर हुआ और बादशाह के कुछ सिपाही उधर से निकले। ब्राह्मण उधर देखने लगा, उसे पता लग गया कि

वे सिपाही शिवाजी की तलाश में घूम रहे हैं। तभी उसे अपने यजमान का ध्यान और उसने सिर घूमा कर देखा। उसका यजमान कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। अब उसने अपनी मुठ्ठी खोलकर देखा तो उसमें कई अशर्फियाँ थीं, उसकी समझ में सारी बात आ गई। सूरत निवासी इस ब्राह्मण ने अपने घर जाकर धन से अपने लिए एक बड़ा सा मकान बनवाया।

सैकड़ों मील पैदल यात्रा करने के उपरान्त शिवाजी गोन्डवाना क्षेत्र से जा रहे थे। उनकी इच्छा हुई कि पैदल के स्थान पर घोड़े पर यात्रा की जाये। अतः राह में एक व्यक्ति से उसका घोड़ा खरीदने के बारे में बात की। उस समय उनके पास चांदी के रुपये पूरे नहीं थे। अतः उन्होंने अपना बटुआ खोलकर कुछ अशर्फियाँ निकली और उनमें से कुछ उस व्यक्ति को दे दीं। उस व्यक्ति को संदेह हो गया। वह बोला– लगता है तुम शिवाजी हो। घोड़े के लिए अशर्फियाँ कोई दूसरा नहीं दे सकता।' इस पर शिवाजी ने उसके हाथ में पूरा बटुआ पकड़ा दिया और वहाँ से चलते बने।

रायगढ़ में ही नहीं, पूरे महाराष्ट्र में शिवाजी के मुगल पंजे से निकल भागने के समाचार से हर्ष था परन्तु वर्षाकाल समाप्त हो रहा था और अभी तक शिवाजी सकुशल नहीं लौटे थे अतः चिन्ता भी स्वाभाविक थी। माँ जीजाबाई के भव्य चेहरे पर यह चिन्ता स्पष्ट परिलक्षित हो रही थी। अपने वीर पुत्र के कुशल समाचार जानने के लिए वे हर समय व्यग्र रहती थीं। १२ सितम्बर १६६६ को जब वे अपने कक्ष में बैठी हुई थीं, द्वारपाल ने आकर कहा–'माँ कुछ संन्यासी आपके दर्शन करना चाहते हैं। भिक्षा दे दो। मैं मिल नहीं सकती।' लेकिन जब द्वारपाल ने बताया कि बताया कि वे मिलने की जिद्द कर रहे हैं कहते हैं कि 'माताजी से ही दान ग्रहण करेंगे।' ''मेरे पास क्या रखा है''– वे बोली– ''अच्छा, आने दो।'' संन्यासी को अन्दर लाया गया।

उनमें से एक वैरागी लपककर माँ जीजाबाई के सामने साष्टांग प्रणाम करने के लिए आगे बढ़ा तो वे पीछे हट गईं– ''यह क्या, मेरे ऊपर पाप न चढाओ, महाराज।'' सभी चकित थे। किसी संन्यासी को इस प्रकार दण्डवत करते नहीं देखा था। वह बैरागी बोला– ''सारा पाप मैं अपने सिर लेता हूं माँ हाँ, माँ! मैं आपका शिब्बा हूँ।'' जीजाबाई के प्रेमाश्रु छलक आऐ। उन्होंने शिवाजी को अंक में भर लिया। बेटा सिसकियां भर कर रोता रहा। माँ उसका मुंह चुमती रहीं। सम्पूर्ण स्वराज्य में

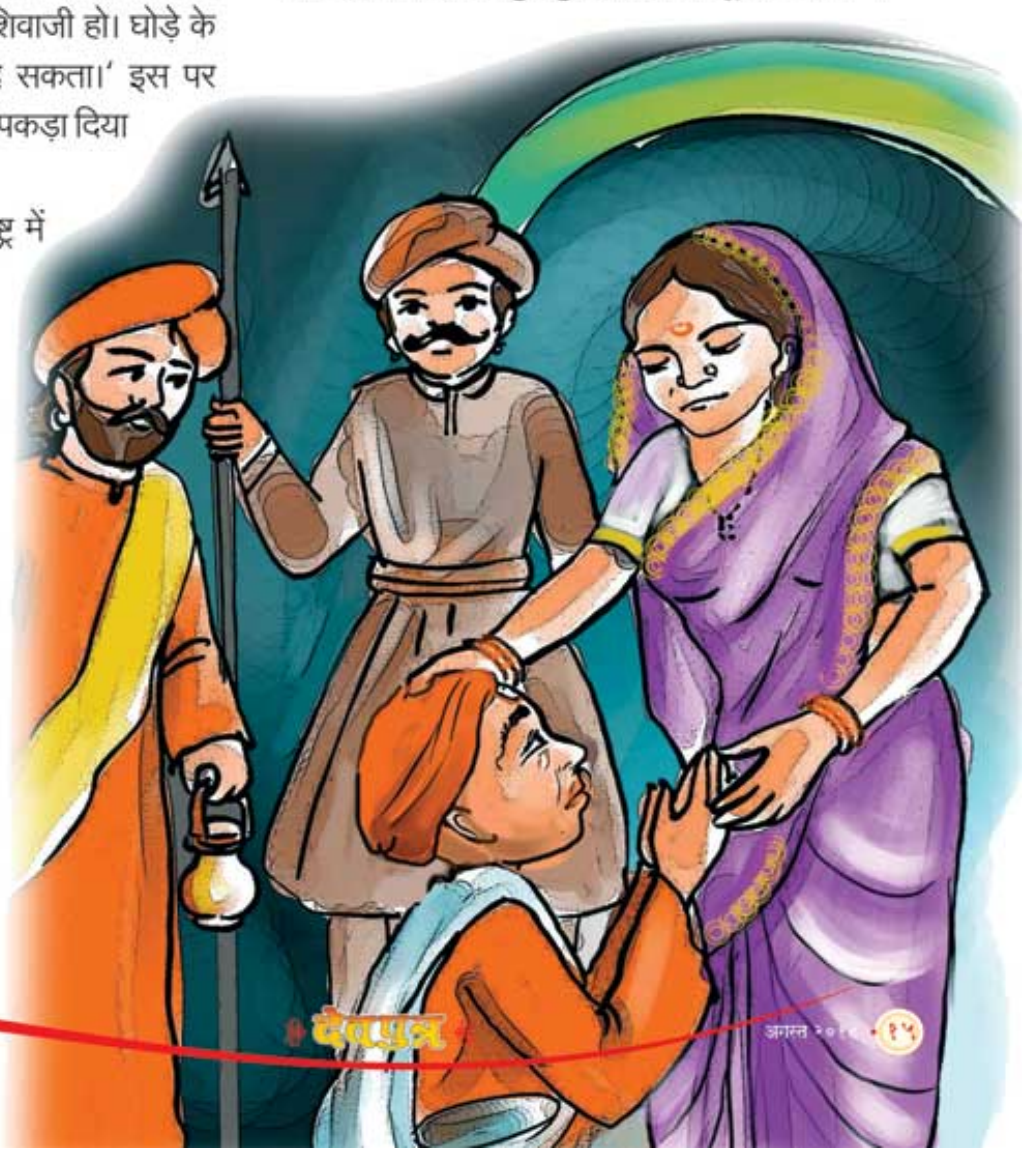

तोप के गोले दागकर सूचना दी गई कि महाराज शिवाजी वापस आ गए। प्रजा ने घर-घर में दीवाली मनाई। चारों और यही चर्चा कि शिवाजी सकुशल स्वराज्य में वापस आ गए।

माँ जीजाबाई जब संयत हुई तो इधर उधर कुछ खोजने लगी फिर परेशान सी होकर बोली- ''शिब्बा, बालराजे शम्भा जी किधर है?''

शिवाजी को फिर शरारत सूझी। वे बिलखते स्वर में बोले- ''माँ, बालराजे हमसे बिछुड़ गया, वह चला गया माँ!''

यह खबर तूफान की भांति बड़ी तेजी से दक्षिण से उत्तर फैल गई कि शिवाजी तो वापस आ गए किन्तु शम्भा जी का रास्ते में स्वर्गवास हो गया। औरंगजेब के पास तक भी यह खबर सुनियोजित ढंग से पहुँचाई गई। इस समाचार से तो औरंगजेब खुश हुआ फिर भी उसके कलेजे में हुकसी उठने लगी कि शिवाजी वापस चला गया। उसने मन ही मन पराजय स्वीकार कर ली।

किन्तु माता जीजाबाई का दुःख दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। वे बार बार शिवाजी के सामने बिलख उठती- ''मेरा बालराजे मुझे वापस करो। मेरी अमानत मुझ वापस करो। मेरी अमानत मुझे लाकर दो।''

एक दिन उपयुक्त अवसर देखकर शिवाजी ने शम्भा जी को मथुरा से बुलाकर माता जीजाबाई की गोद में बिठा दिया। माँ भाव विभोर हो उठीं तो बेटा स्नेहासित। अब शिवाजी भविष्य की योजनाएं बनाने में फिर जुट गए।

(निरंतर अगले अंक में)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *हनुमान जी जब लंका जाने के लिए समुद्र लांघ रहे थे तो किस पर्वत ने उन्हें कुछ समय विश्राम करने को कहा?*
- *महाबली भीम के शंख का क्या नाम था?*
- *प्राचीन काल में वियेतनाम में किस देवता की पूजा सबसे अधिक होती थी?*
- *कर्नाटक के हम्पी में भारत के किस विशाल और समृद्ध साम्राज्य की राजधानी के भग्नावशेष हैं?*
- *एक कल्प लगभग ४४० करोड़ वर्ष का होता है। इस समय कौन सा कल्प चल रहा है?*
- *साकेत (अयोध्या) के राज चन्द्रगुप्त ने किस महान राजवंश की स्थापना की?*
- *प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा कितने वर्षों में पूरी होती थी?*
- *भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अप्रैल १९१३ में अमरीका में किस क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की गई?*
- *मेवाड़ के किस महाराणा की राजधानी चावण्ड थी?*
- *पूना में भगिनी निवेदिता किन क्रांतिकारियों की माता को सांत्वना देने गई थीं?*

(उत्तर इसी अंक में) (साभार : पाथेय कण)

आजादी

कविता : भगवती प्रसाद द्विवेदी

मैना-सुग्गा पिंजरे में
हो बंद, दुखी हो जाते,
सुख-सुविधा, मनचाहा भोजन
फिर भी चहक न पाते।

चिड़ियाघर में कैद शेर
हरदम दहाड़ गुर्राता,
यहां गुलामी का यह जीवन
उसको रास न आता।

मछली जल में मचला करती
जल प्राणों से प्यारा,
जल से बाहर रहकर जीना
उसको नहीं गवारा।

मुसकाती कलियों को है
फूलों की डाली प्यारी,
अगर तोड़ लेता कोई
तो मुरझातीं बेचारी।

सबको अपना घर प्यारा है
आजादी है प्यारी,
आजादी में जीवन है
जीवन की खुशियाँ सारी।

• मीठापुर (बिहार)

बड़ों की बड़ी सुरक्षा

संवाद : शंकरलाल माहेश्वरी

राहुल – अवधेश! कल तुम्हारी बहुत ही प्रतीक्षा की तुम सार्वजनिक पुस्तकालय में क्यों नहीं आये?

अवधेश– दोस्त! कल हमारे विद्यालय में छात्र संघ का चुनाव था। मैं भी प्रधानमंत्री पद के लिए उम्मीदवार था न!

राहुल – चुनाव का क्या परिणाम रहा?

अवधेश– तुम्हारी शुभकामनाओं से मैं प्रधानमंत्री के पद पर चयनित हुआ हूँ।

राहुल – अब तो इस पद पर रहते हुए तुम्हारी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई है। मुझे भरोसा हैं कि तुम्हारे इस पद पर रहते हुए विद्यालय का अवश्य विकास होगा और हाँ, अब तो अवधेश, तुम्हे तो जेड़ प्लस सिक्योरिटी अवश्य मिलेगी ही।

अवधेश– क्यों मजाक करते हो राहुल! राहुल ये जेड प्लस सिक्योरिटी क्या होती हैं और ये किसे मिलती है?

राहुल– हमारे देश के बड़े नेताओं, उच्चाधिकारियों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सरकार की ओर से अलग–अलग श्रेणी की सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है।

अवधेश– सुरक्षा हेतु श्रेणी का निर्धारण कौन करता है?

राहुल – केन्द्र सरकार तय करती है। सरकार की तरफ से तीन श्रेणियों में सुरक्षा की जाती है।

अवधेश – ये तीन श्रेणियां कौन कौनसी हैं?

राहुल – १. जेड प्लस २. जेड वाई ३. एक्स श्रेणी की सुरक्षाएं हैं। यह व्यवस्था केवल केन्द्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और उच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा प्रसिद्ध नेताओं के लिए होती है।

अवधेश– राहुल! हमारे देश में ऐसी सुरक्षा व्यवस्था कितने लोगों को मिली होगी?

राहुल – यह व्यवस्था देश के चार सौ पचास लोगों को मिली हुई है।

अवधेश– इस सुरक्षा व्यवस्था में किस किस श्रेणी के सुरक्षाकर्मी होते है?

राहुल – इस सुरक्षा व्यवस्था में प्रोटेक्शन ग्रुप (एस पी जी), नेशनल सिक्युरिटी गार्ड (एन एस जी) इंडियन तिब्बत बोर्डर पुलिस (आई टी बी पी) और सेन्ट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स (सी आर पी एफ) एजेन्सियां सम्मिलित हैं।

अवधेश – जेड प्लस सुरक्षा किसके लिए होती है?

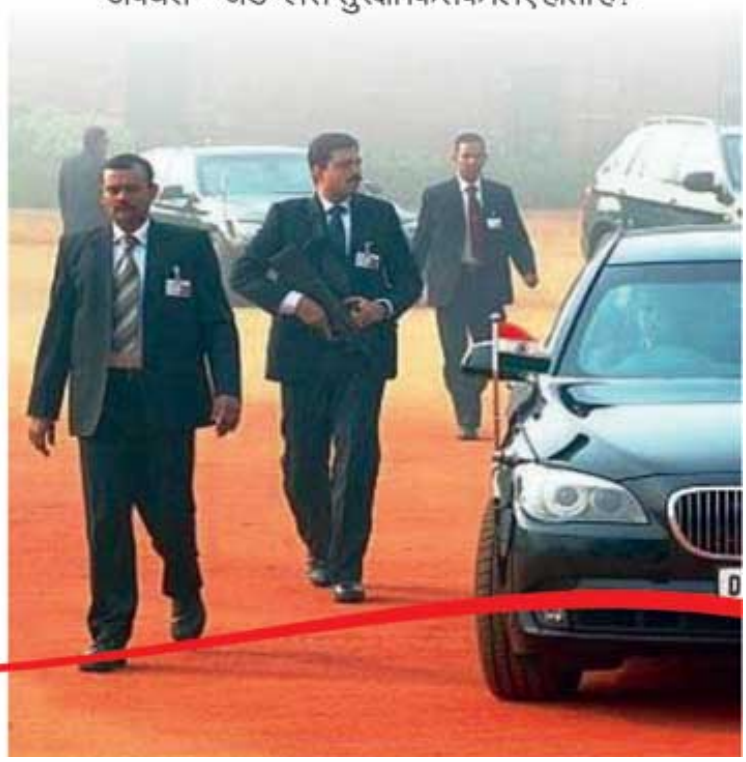

राहुल –यह देश की सबसे बड़ी सुरक्षा व्यवस्था है। इसे वी आई पी श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था कहा गया है। इस सुरक्षा व्यवस्था में छत्तीस सुरक्षाकर्मी तैनात होते है। इसमें एन एस जी और एस पी जी के कमाण्डो भी शामिल रहते है।

अवधेश– इतने सुरक्षाकर्मियों की क्या आवश्यकता है?

राहुल – दोस्त! इस सुरक्षा में पहले घेरे की जिम्मेदार एन एस जी की होती है और दूसरी परत (घेरा) एस पी जी कमाण्डो की होती है। उसके अलावा आई टी बी पी और सी आर पी एफ के जवान भी जेड प्लस की सुरक्षा श्रेणी में होते हैं।

अवधेश – यह जेड श्रेणी क्या है?

राहुल – जेड श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बाईस सुरक्षा कर्मी तैनात रहते है। इस श्रेणी में आई टी बी पी और सी आर पी एफ के जवान व अधिकारी सुरक्षा हेतु उपलब्ध कराये जाते हैं।

अवधेश – इन जवानों को अन्य साधन भी दिये जाते होंगे?

राहुल – हाँ! इन्हे एस्कोर्टस और पायलट वाहन दिये जाते है।

अवधेश – वाई श्रेणी की सुरक्षाकर्मियों की संख्या कितनी होती है।

राहुल – वाई श्रेणी में ग्यारह सुरक्षाकर्मी होते हैं।

जिनमें दो पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर (पी एस ओ) शामिल होते हैं।

अवधेश – इसके अलावा और कौनसी श्रेणी होती है।

राहुल – एक एक्स श्रेणी की व्यवस्था है। जिसमें केवल दो सुरक्षाकर्मी होते है। इनमें से एक पी एस ओ सम्मिलित है।

अवधेश – राहुल? प्रधानमंत्री के लिए भी विशेष सुरक्षा व्यवस्था होती होगी?

राहुल – हाँ प्रधानमंत्री और पूर्व प्रधानमंत्री तथा उनके परिजनों की सुरक्षा व्यवस्था स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप की होती है। पूर्व प्रधानमंत्री के परिजनों के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था कुछ समय के लिए होती है।

अवधेश – तब तो राहुल इस तरह की सुरक्षा व्यवस्था में काफी पैसा खर्च होता होगा?

राहुल – इस व्यवस्था में केवल एस पी जी के लिए सालाना तीन सौ करोड़ रुपयों से भी ज्यादा राशि का बजट निर्धारित है।

अवधेश– यह व्यवस्था तो लम्बे समय से चल रही होगी।

राहुल – यह व्यवस्था सन् १९८४ में श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के कुछ साल बाद १९८८ में एस पी जी का गठन हुआ था। इस श्रेणी की सुरक्षा व्यवस्था सबसे अधिक मँहगी है।

अवधेश – अभी एस पी जी सुरक्षा व्यवस्था किन्हें उपलब्ध है?

राहुल – वर्तमान में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी तथा उनकी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्या, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तथा उनकी पत्नी गुरुशरण कौर और कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी और इनकी बहन प्रियंका वाड्रा को भी उपलब्ध है कांग्रेस उपाध्यक्ष के लिए भी यह व्यवस्था सुलभ है।

अवधेश – राहुल! आज तो तुमने मुझे अतिमहत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा व्यवस्थाओं की जानकारी दी है इसके लिए तुम्हार बहुत आभारी हूँ।

● आगूच (राज.)

तिरपन

कहानी : राकेश चक्र

नाटे कद का तिरपन देखने में लगता कि वह मुश्किल से पाँचवी कक्षा का विद्यार्थी होगा, लेकिन जब उससे मैंने पूछा– ''आप कौन सी कक्षा में पढते हो?''

वह बोला–''जी मैंने नवीं कक्षा की परीक्षा इस वर्ष दी है और दसवीं कक्षा में आ गया हूँ।''

''आपके विषय क्या–क्या है?''

''जी, विज्ञान वर्ग के विषय हैं।''

''आप रहते कहाँ हो?''

''जी, थत्यूड़ से आगे एक छोटे से गाँव में।''

घना कोहरा फैल गया है। बादलों ने मौसम को सुहावना बना दिया है। तभी खूब जोर की बारिश आ जाती है। मैं पहले से ही मक्का के फूले (पॉपकार्न) बेचनेवाली बिब्बो बहन के पास खड़ा हूँ। दस जून हो गई है, फिर भी पहाड़ों की रानी मसूरी का पर्यटन सीजन ठण्डा ही चल रहा है। सभी फुटपाथिए, फेरिवाले तथा छोटे दुकानदारों से लेकर बड़े–बड़े दुकानदार, होटलवाले आस लगाए बैठे हैं कि पर्यटकों का मेला पिछली साल की तरह कब लगना शुरू होगा, जिससे उन्हें मोटी आमदनी हो।

मुझे अपना बचपन मक्के के फूले देखकर याद आ जाता है, जब हमारे गाँव में कभी–कभी बरसात का सीजन समाप्त होने के बाद दूसरे कस्बे से भाड़ करने वाला (भड़भूजा) आता था, जिससे हम गाँव के बच्चे और बड़े मक्का, बाजरा, ज्वार, मटर, चना आदि भुनवाते थे। भड़भुजा दानों की भुनवाई में अपनी मजदूरी लेता था। पाँच पैसे या एक किलो दानों पर छटाँक दो छटाँक (लगभग सौ ग्राम) दाने। बड़े मजे से हम फूले–फूले दाने खाते थे।

भड़भूजे के पास छोटे–बड़ों की भीड़ लगी रहती थी। सभी चाहते थे कि मेरा पहले भुज जाए और जब हम कभी हमसे पहले किसी दूसरे का भुनता तो जीभ में पानी आने लगता था। अकसर सभी घरों में गर्मियों की ऋतु में बेकार कागजों से बर्तननुमा भगोने से बनाए जाते थे, जिन्हें गाँव में 'ढला' कहते हैं। इन्हीं ढलों का घर में माँ–बहनें सजा–संवारकर तैयार करती थीं। तथा इनमें अल्पना आदि की चित्रकारी करके तरह–तरह के रंगों से सजातीं। खराब कागज गली में दिखाई न पड़ते थे। मोमजामे की पन्नियाँ तो थीं ही नहीं। हम इन्हीं ढलों में दाने रखकर भुनवाने आते थे और दाने भुनवाने के बाद इतना तेज दौड़कर अपने घर जाते थे कि कोई अन्य हमारे भुने दाने रास्ते में यूँ ही न ले ले। हम सीधे जाकर अपनी माँ को ढला पकड़ा देते थे और वही हम सब बहन–भाइयों को हिसाब में बाँटती थीं। हम तो उन दानों को अपनी–अपनी कमीज की जेबों में भर लेते, फिर घर से बाहर निकलकर बच्चों के साथ खेलते–खेलते खाते जाते। कई बार तो हम बच्चे आपस में अदल–बदलकर दाने खाते थे। कितना आनन्द आता था उन भुने दानों को खाने में।

जिस दिन गाँव में भड़भुजा आता, पहले वह पूरे गाँव में एक आवाज लगा जाता था– ''आज भाड़ होइगौ भाड़।''

उसकी आवाज सुनकर बच्चों में खुशी की लहर दौड़ जाती थी।गाँव के सब बच्चे उत्सुक होकर अपनी माँ से पूछते–''अम्मा, आज का चीज भुनाओगी ?

कई बार भुनने की चीज (दाना) घर में न होता तो आस–पड़ोस से अनाज की अदल–बदल कर लेते। हम बच्चों की जीभों में भुनने से पहले ही पानी भर आता था।

गाँव के आसपास कई बाग थे, जिनमें एक फूलबाग भी था। जिसमें जमींदारी काल में फालसे, अनार, आम, अमरूद, जामुन आदि कई तरह के फलों के वृक्ष थे और जमींदार ही उनका उपभोग करता था। इस बाग के कई तरह के फूल जैसे बेला, चमेली, गेंदा, हरसिंगार, गुलाब आदि के पौधे बाग के चारों ओर काफी मात्रा में लगे थे, जिससे हर ऋतु में ही बाग के आस–पास का वातावरण महकता रहता था।

वह बाग गाँव के पूर्व की ओर था। पूरबा हवा चलने पर पूरा गाँव ही महक उठता था। असली आनन्द तो छोटे मियाँ जमीदार या उसकी जी हुजूरी करने वाले ही लेते थे। मजाल थी कि कोई बच्चा या बड़ा घुस जाए। फल चाहे सड़कर घूरे पर फेंक दिए जाएँ और गाँववाले बच्चे –बड़ों के मुँह में पानी

आता रहे, लेकिन मिल–बाँटकर खाना जमींदार अपना अपमान समझता था।

बाद में धीरे–धीरे यह बाग उजड़ता गया तथा आजादी के काफी वर्ष बाद इसे जमींदार की तीसरी पत्नी के बच्चों ने घर का खर्च चलाने के लिए मेरे बड़े भाई श्री शादीलाल, श्री शिवचरन लाल मुखिया, श्री खचेडू लाल को बेच दिया था। भड़भूजा इन्हीं बागों में से सूखे पत्ते इकट्ठे करके भाड़ में जलाता था।

मैं आज भी भुने हुए दाने पसन्द करता हूँ और कभी–कभी छब्बो बहन के पास आकर मक्के के फूले खाता हूँ। इनका युवा पुत्र कन्हैया भी पास में दूसरे ठिए पर मक्के के फूले बेचता है।

अभी–अभी तिरपन भी छब्बो द्वारा मँगाया गया दुकान से सामान बिना भुनी मक्की, तेल आदि लाया है। सामान लाने की एवज में कहूँ या प्यार में, यह अपनी कमीज की दोनों जेबों में मक्की के भुने दाने खाने के लिए भर रहा है, जैसे कभी हम भरते थे। छब्बो बहन ने सड़क के किनारे एक छोटी सी मेज स्टोव और छोटी कड़ाही के सहारे मक्की के दाने भून–भूनकर ही अपनी पूरी जवानी काट दी है। अब तो बच्चे काफी बड़े हो गए हैं। पति का स्वर्गवास हो गया है। इन्हें पच्चीस–तीस बरस पहले लखनऊ से एक नवाब परिवार व्यापार कराने के बहाने लाया था और इनकी सारी नगदी हजम कर गया। छब्बो बहन का परिवार सड़क पर आने को मजबूर हो गया।

अब बारिश कम होती जा रही है। छब्बो बहन ने एक बड़ा–सा छाता अपने खोमचे के ऊपर लगा रखा है। लोग बरसात से बचने के लिए हवाघर और आस–पास दुकानों के सामने लगे परदों की ओट में आ गए हैं।

भीड़ न होने के कारण छोटे दुकानदार और फेरीवाले अपनी बिक्री न होने का रोना रो रहे हैं। तिरपन भी अपनी दोनों जेबों को मक्की के फूलों से भर और हाथ में छब्बो के खोमचे में रखी पाँच–सात कैन्डियों को लेकर जल्दी से हवाघर की छत के नीचे आ जाता है, जो अपनी बिक्री की कैन्डियों को रखकर छब्बो बहन का सामान खरीदने गया था। यहाँ उसके अन्य साथी दीपू, सुरेश, परसू खड़े हुए हैं और आपस में बातचीत कर रहे हैं।

तिरपन को देखते ही सुरेश ने कहा– ''यार, दोनों जेबों में भरकर मक्की के फूले ला रहे हो, हमें भी खिलाओ न।''

''हाँ, सबको खिलाता हूँ।''

तिरपन सबको मक्की के फूले थोड़ा–थोड़ा बाँट देता है और सभी मिल–जुलकर

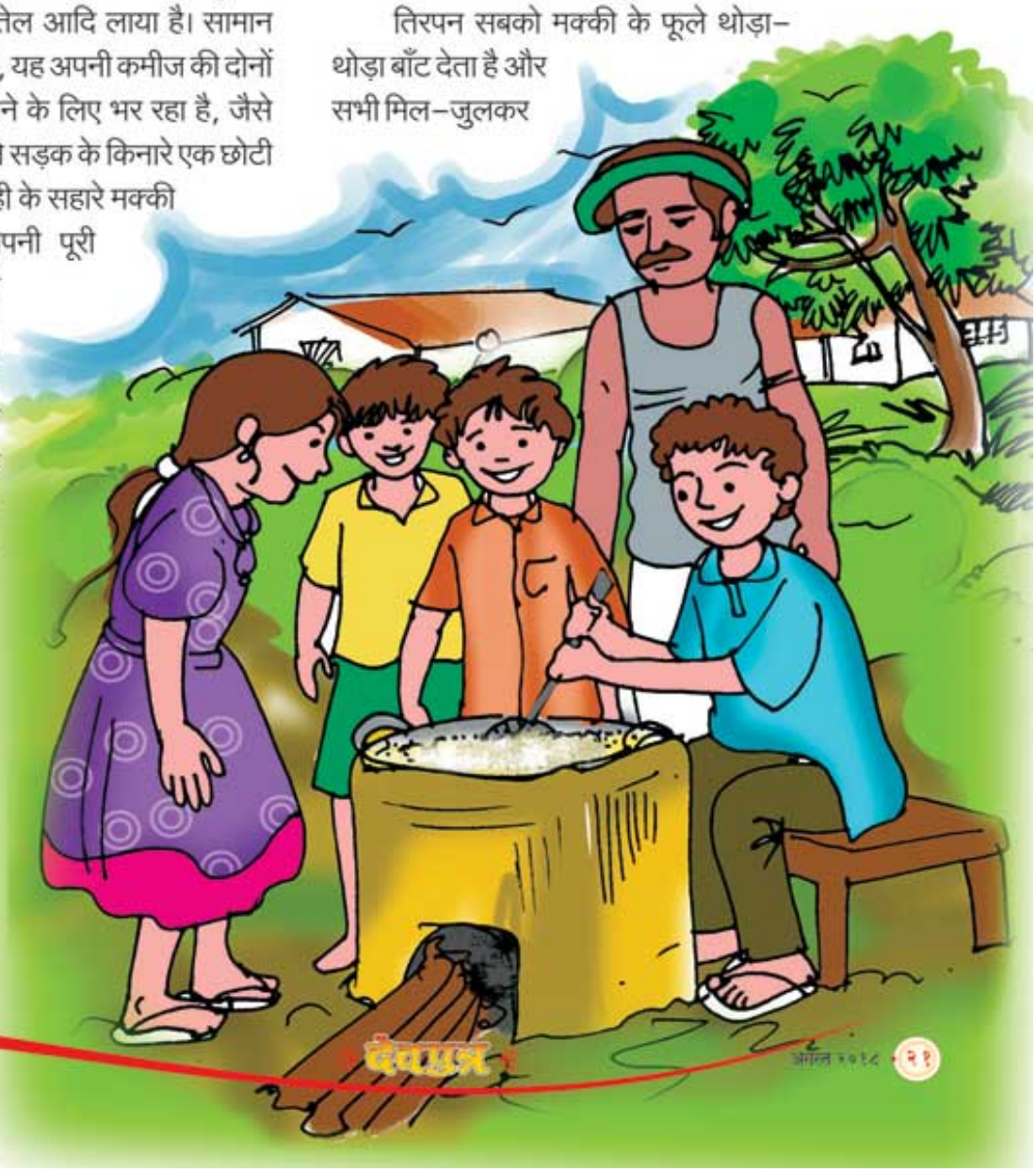

बड़े मजे से मक्की के फूले खा रहे हैं।

दीपू बोला– ''यार तिरपन, तेरी बिक्री आज कितने की हुई?''

''कुल बीस की और तेरी?''

''पन्द्रह रुपए की। बस, तीन कैन्डी ही अब तक बिकी है। सीजन चल ही नहीं रहा है। मैं बड़ी उम्मीद लगाकर आया था कि गर्मियों की छुट्टियों में हजार–दो हजार कमाकर घर लौटूँगा, मेरी अम्मा ने बड़ी मजबूरी में भेजा था।''

''तेरे पिताजी क्या काम करते हैं?''

''उन्हें टी.बी. हो गई है। घर में दवा खाकर पड़े रहते हैं। कुछ भी काम नहीं होता उनसे।'' तिरपन इन सबसे ठिगना है, बोला– ''टी.वी. तो उन्हीं लोगों को होती है, जो बीड़ी–सिगरेट या शराब ज्यादा पीते हैं। क्या तेरे पिताजी यह सब करते थे?''

''जब मैं चार बरस का ही होऊँगा तभी से मुझे होश है कि वह खूब शराब पीकर घर आते और अम्मा से खूब गाली गलौज करते। यदि अम्मा कुछ कह देतीं तो मारपीट करते। हम सब भाई–बहन यह देखकर रोने लगते और अम्मा से लिपट जाते। फिर हमें भी पीटते।''

''तेरी अम्मा क्या करती हैं?''

''अम्मा तो कई घरों का काम करती हैं। मुझसे बड़ा भाई एक हलवाई की दुकान पर काम करता है ओर मेरी बहन भी दो–तीन घरों का काम करती है। बस, घर में मैं ही पढ़ने जाता हूँ।''

''तू कौन सी कक्षा में पढ़ता हैं?''

''मैं छठी कक्षा की परीक्षा देकर आया हूँ। तू कौन सी कक्षा में है।''

''मैं दसवी कक्षा में आ गया हूँ।''

''देखने में तो लगता है कि तू छठी सातवीं में पढता होगा?''

''मैं कभी फेल नहीं हुआ। माँ ने चार बरस की उम्र में पढ़ने बैठा दिया था। मेरी माँ आठवीं कक्षा तक पढ़ी हुई हैं और पिता ऐसे ही थे जैसे तेरे हैं। घर में एक गाय, दो बकरी, एक बैल है। थोड़ी सी खेती है। हम सभी बहन–भाई माँ की मदद करते हैं–खेती में, पशु पालने में। बस गुजारा हो जाता है किसी तरह।''

सुरेश और परसू दोनों ही उनकी बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे, लेकिन इन दोनों ने घर की मजबूरीवश पढ़ना छोड़ दिया था। सुरेश ने कक्षा चार के बाद और परसू ने कक्षा पाँच के बाद।

सुरेश बोला– ''यार तिरपन, तूने पढाई नहीं छोड़ी, तू हिम्मत से पढता ही रहा।''

''हाँ, मेरी माँ ने पढाई के लिए हमेशा मेरा उत्साह बढ़ाया इसलिए नहीं छोड़ी, तू हिम्मत से पढता ही रहा।''

''हाँ, मेरी ने भी माँ पढाई के लिए हमेशा प्रोत्साहित किया। अच्छे नम्बरों से हमेशा पास होने के कारण मेरी फीस माफ हो गई और तीस रुपए माहवार की छात्रवृत्ति भी बँध गई। मैं पढकर शिक्षक बनूंगा। सुरेश, तू कौन सी कक्षा में पढता है?''

''मित्र, मैंने अपनी पढाई कक्षा चार के बाद ही छोड़ी, अब तक मैं सातवी कक्षा में आ जाता। घर में पिता बाहर जुआ खेलकर आते और हार जाते तो माँ से रूपए, जेवर आदि भी मारपीट कर जबरदस्ती ले जाते। सब कुछ धीरे–धीरे खत्म हो गया। घर में खाने के लाले पड़ गए। मैंने इधर–उधर घरों का काम किया। पिता एक दिन कुछ रुपए जीत गए और खुशी में शराब पीकर घर आ रहे थे कि उनकी रास्ते में बस से टक्कर हो गई और मर गए।''

''दोस्त, तू अब भी पढना शुरू कर दे, अभी दो–तीन साल ही खराब हुए हैं। मेहनत करेगा तो सब पिछला भी कवर कर लेना। अनपढ़ आदमी तो पशु के समान है।''

''हाँ, तू ठीक कह रहा है, अबकी बार मैं पाँचवी में प्रवेश ले लूँगा।''

सुरेश, परसू के बारे में जानता था। सुरेश ने उसे भी आगे पढ़ने की बात समझाई।

तेज बरसात के बाद कोहरा छँट गया था और बरसात बन्द हो गई थी। छिटपुट लोग सड़क पर टहल रहे थे और तिरपन, सुरेश, दीपू, परसू भी मक्की के दाने खाकर, अपने दुख–सुख बाँटकर, फिर से हाथों में कैन्डी लिए सड़क पर आ गए थे।

● मुरादाबाद (उ.प्र.)

संरक्षक हो माटी के

कविता : डॉ. मधुसूदन साहा

तुम सपूत हो
देवदूत हो
संरक्षक हो माटी के।
तुम पर है विश्वास देश को,
तुम्हीं मिटा सकते कलेश को,
कहाँ कौन है घात लगाये
तुम्हीं जानते छद्मवेश को,
तुम रक्षक हो
तुम प्रेक्षक हो
इस कश्मीरी घाटी के।
तुम में है कितना दुस्साहस
करते नहीं तनिक तुम आलस
विजय पताका फहराने में
तुम्हें नहीं होता असमंजस
तुम आरोही
तुम अश्वरोही
हो 'प्रताप' परिपाटी के।

तुम हमीद की याद दिलाते
दुर्गम पथ पर बढ़ते जाते
जो भी सीना ताने आता
उसको झट से धूल चटाते
आगे बढ़कर
सिर पर चढ़कर
प्राण बचाते घाटी के।

• राउरकेला (उड़ीसा)

चुनमुन

कहानी : शंकरदयाल भारद्वाज

बरसात हो रही थी। कभी तेज कभी मंद–मंद फुहार पड़ रही थीं। गंगा तट पर, नहाये तपस्वी की तरह पेड़ खड़े थे। हवा के झोंके से थर–थर काँप रहे थे। जब प्रकृति ने पेड़ों की यह दशा कर दी थी तब उनके नीड़ों की कहानी तो अधिक ही कम्पायमान थी।

घोंसले गीले हो चुके थे। नन्हे–नन्हे खग शिशु माँ के पंखों के बीच सटे–सिकुड़े प्रकृति से तादाम्य बनाने का पाठ सीख रहे थे। आज चिड़िया ने उन्हें गीली ठंडी में जीवन जीने का उपाय सुझाया था। तभी एक शिशु बोला–

''माँ! मुझे भूख लगी है।'' मौसम ने ऐसी झड़ी लगाई थी कि दूसरे दिन तब बरसात ने अपना क्रम नहीं तोड़ा था। चिड़िया उड़ जाए तो दाने ले आये किन्तु चिड़िया के उड़ते ही बच्चे गीले हो जायेंगे। खोखले में चारों ओर से सुरक्षित होने के बाद भी पेड़ का पानी ऊपर से गिर रहा था। हवा का झोंका नहीं लगता था किन्तु ऊपर से हवा का वेग हिला देता था।

चिड़िया की चोंच इतनी बलवान नहीं थी कि किसी बड़े पत्ते से विवर को ढंक सके। तिनके संग्रह करके घर बनाने वाले, चट्टानों के बीच में भी तिनके का ही सहारा लेते हैं। चिड़िया ने बादलों की स्तुति प्रारंभ की।

हे मेघ! तुम धन्य हो
अब धरती तृप्त है तुम्हारे आने से।
इस तरह रिमझिम बरस जाने से।
किन्तु मेरे बच्चे भूखें हैं
इन्हें दाना चाहिए
कुछ पल के लिए आपको
रुक जाना चाहिए
हे परोपकारी मेघ!
हमें दो घड़ी का अवसर दें।
इसके बाद अपनी वसुन्धरा को
पानी–पानी कर दें।
मेघ मुस्कुराया।
नन्ही चिड़िया के लिए।
रुक सा गया क्षण भर के लिये।

चिड़िया बच्चों को समझाकर उड़ान भरी। कुछ ही दूर में बिखरे दाने मिल गये। गीली धरती में वे भी नरम पड़ गए थे। चिड़िया चुगने लगी। दो दाने को खाकर स्वाद परखा। बच्चों के अनुकूल है यह समझकर चोंच में दबाने लगी। चुगने के बाद उड़ना चाहा तो उड़ न सकी। वह जाल में फंस चुकी थी। घबराई, पछताई बच्चों की तस्वीर

सामने आयी। तब बहेलिया बोला– ''चिड़िया तुम जाल में फंस चुकी हो। अब हमारे साथ चलो।'' चिड़िया बोली–''भाई! तुम जीते, हम हारे। हमें ले चलिए। पर एक छोटा सा जरूरी काम है सामने पेड़ पर हमारा निवास है। घोसले में शिशु है उन्हें दाना देना है। आप इतनी कृपा स्वीकारें।''

बहेलिया ने कहा–''बच्चों की इतनी फिकर थी तो पेड़ से उड़कर क्यों आई? दाने को चोंच में क्यों लगाई।'' चिड़िया ने कहा, ''महाशय! पेड़ से उड़ना ही पड़ता है दाना चुगना ही पड़ता है। पेड़ भी मालिक का है। दाना भी मालिक का है। इन दोनों के बीच हमें परिवार चलाना ही पड़ता है। हम पेड़ की कोई हानि नहीं करते। गिरे पत्ते, पड़े तिनकों से घर बनाते हैं और पड़े हुए दानों को ही चोंच से उठाते हैं। किन्तु मालिक आपसे इतना बर्दाश्त नहीं होता। बस हमें एक बार दो दाने पहुचांने दें फिर हम आपके पास आते हैं।''

बहेलिया बोला–''सत्य बोलती हो चिड़िया?'' चिड़िया बोली–''हमें असत्य नहीं पढ़ाया गया। स्वयं भी जरूरत नहीं रहती। हमारा जीवन सत्य पर आधारित है। पहली बार सुना है, सत्य के अतिरिक्त भी आचरण किया जाता है। किन्तु हम नहीं करेंगे। आप हमारे साथ चलिए और हमें लेकर लौटिए।''

बहेलिया पेड़ तक गया। चिड़िया ने शिशुओं को दाना खिलाया, दुलराया, समझाया और बहेलिये का परिचय कराया। पूरी कहानी जानकर बहेलिया बोला– चिड़िया तेरे घोंसले का परिवार कितना सुन्दर है। एक बात बता क्या तुम मुझे भी चिड़िया बना सकती हो। थक गया हूं आदमी होकर। चिड़िया उड़कर बहलिये के कंधे में बैठ गयी। बहेलिया अवाक् देखता रह गया। घोसले को चुनमुन को, चिड़िया को।

गुरु की महिमा

कविता : उमेशचन्द्र चौहान

बालक तो बस दीप समान, शिक्षक हैं जैसे चिंगारी।
तिल-तिल ज्ञान भरा दीपों में, चिन्गारी ने तब लौ बारी।।
दीपों की जब जली कतारें, चमक उठी फिर दुनिया सारी।
बालक तो बस...

राष्ट्र संस्कृति के गुरु माली, बच्चे नन्हे पौध समान।
मोड़ झुकाएं हर वह डाली, जो न राष्ट्र का समझे मान।।
संस्कारों की खाद पिलाकर, हरिया दी धरती पर क्यारी।
बालक तो बस...

मुनि सी सादगी, मन में आग, सेंक कभी दें, कभी दुलार।
सोने के संग बनें सुहागी, गुणता जाँच करें उद्धार।।
दुर्गुण खुद, हो जाए खाक, मन की ऐसी करें तैयारी।
बालक तो बस...

माँ की ममता, प्यार पिता सा, गुरु आश्रय में बालक पाता।
गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु ही उसका भाग्य विधाता।।
राजराज्य सा, ग्राम राज्य हो, धर्म कर्म की हो बलिहारी।
बालक तो बस...

पढ़ना-बढ़ना, दुनिया गढ़ना, मेहनत नहीं अकारज जाती।
श्रम से कभी नहीं घबराना, लक्ष्मी तब खुद ही घर आती।।
हे भारत के भावी नागरिक, याद रखो गुरु महिमा न्यारी।
बालक तो बस...

● टिमरनी (म.प्र.)

(गतांक के आगे)

कामरूप के संत साहित्यकार (१३)

कथासत्र–१२

श्रीमंत शंकरदेव

(जन्म १४४९ महाप्रयाण १५६८)

संवाद : डॉ. देवेनचन्द्र दास 'सुदामा'

दूसरे रविवार को फिर सत्र आरंभ हो गया। दादाजी ने कहा– इस प्रकार शंकरबर की आयु बारह वर्ष हुई। शंकरबर के पूर्वज एक से बढ़कर एक विद्वान थे। परन्तु शंकरबर मूर्ख रहा। दादी ने कभी–कभी उसको इसके लिए फटकारा भी था। पर शंकरबर उस पर ध्यान ही नहीं देता। एक रात को भोजन के समय दादी ने गंभीरता के साथ कहा– ''बेटे! तुम्हारे वंश के सब लोग एक से बढ़कर एक विद्वान हैं, क्या तुम मूर्ख बनकर ही रह जाओगे? इस प्रकार रह जाएगा तो तू वंश का कलंक बन जाएगा। सुनो, विद्या से बढ़कर कुछ भी नहीं है।'' शंकरबर को बहुत बड़ा धक्का लगा। उसने कहा– ''दादी! मैं भी पढ़ूँगा। मुझे गुरुकुल में भेज दो।'' शंकरबर की बात सुनकर दादी खुश हो गई और सुबह अपने संबंधियों को बुलाकर शंकरबर को गुरुकुल में भेजने की तैयारियाँ की। उस समय महेन्द कन्दली नामक एक विद्वान ब्राह्मण का गुरुकुल बहुत प्रख्यात था। शंकरवर को वहाँ भेज दिया गया। गुरु ने शंकरबर को देखकर ही परख लिया था कि लड़का तेज बुद्धिमान है और महान पुरुषों का लक्षण भी उनमें है। स्नेह के साथ उसको पढ़ाने लगा। एक बार सिखाने पर ही बच्चा सब कुछ आत्मसात् कर लेता था। इस प्रकार वर्ण परिचय हो गया कम दिनों में। शंकरबर के मन में नया चिन्तन का प्रारंभ हुआ। उसने एक कविता लिखी–

(दादाजी ने एक टुकड़ा कागज निकाला और पढ़ने लगे।)

करतल कमल कमल दल नयन।
भवदब दहन गहन बन शयन।।
नपर नपर पर सतरत गमय।
सभय मभय भय ममहर सततय।।
खरतर बरशर हत दशबदन।
खगचर नगधर फणधर शयन।।
जगदघमपहर भवभयतरण।
परपद लयकर कमलज नयन।।

मनोरमा – दादाजी! कविता का अर्थ क्या है?

दादाजी – कविता भगवान विष्णु के रूप और गुणों का वर्णन है। कविता गुरु को दिखाया। गुरु ने भाव विभोर होकर शंकरबर की तरफ देखा और आशीर्वाद दिया। फिर एक दिन शंकरबर गुरुकुल के घर में सो रहा था। उसके सिर पर धूप लगी तो एक नाग अपना फन फैलाकर छाया प्रदान कर रहा था। इतने में गुरु महेन्द्र कन्दलि वहाँ आए तो उन्होंने भी देखा। नाग धीरे–धीरे वहाँ से चला गया। गुरु ने शंकरबर के अलौकिक महिमा परखकर विद्यार्थियों से कहा– बच्चो! आज से शंकरबर को तुम लोग ''शंकरदेव'' कहोगे। क्योंकि शंकरदेव साधारण मनुष्य नहीं है। उस दिन से शंकरबर का नाम हुआ ''शंकरदेव''।

उस समय कामरूप में जो शिक्षा की व्यवस्था थी वह संस्कृत भाषा में ही हुई थी। शंकरदेव संस्कृत भाषा में प्रकाण्ड विद्वान बन गए। वेदों, उपनिषदों, पुराणों का अधिकारी विद्वान बने। सनातन हिन्दू धर्म के सर्वश्रेष्ठ देवता है विष्णु। शंकरदेव के पूर्वजों शिव–दुर्गा के उपासक याने शाक्त थे। परन्तु शंकरदेव ने उस प्रकार हिंसा–धर्म नकार

कर अहिंसा मूलक वैष्णव धर्म को अपनाया। गुरुकुल में शिक्षा समाप्त कर घर आकर उन्होंने विष्णु के श्रेष्ठत्व के बारे में प्रचार करने लगे और कहा कि विष्णु का सर्वश्रेष्ठ स्थान है बैकुण्ठ। वैकुण्ठ पाने के लिए सभी देवी–देवता इच्छा करते हैं। तब उनके वंश के अंग्रेजों और कई ब्राह्मण विद्वानों ने उनसे कहा– ''तुम विष्णु और वैकुण्ठ के बारे में जो बातें प्रचार कर रहे हो वह कैसा है? विष्णु याने हरिनाम लेकर आसानी से लोग वैकुण्ठ प्राप्त कर सकते हैं। विष्णु और वैकुण्ठ के बारे में तुम वास्तविकता के माध्यम से दिखाओ। ''अंग्रेजों और विद्वतजनों के आग्रह से उन्होंने ''चिहण यात्रा'' नामक नाटक लिखा और चित्र पट्ट तथा संगीत नृत्य और अभिनय द्वारा दिखाने का प्रयास किया। शंकर देव ने इस नाटक लोकभाषा कामरूपी और संस्कृत के मिश्रण से बनाया था। खोल (मृदंग) ताल आदि वाद्य भी जुगाड़ किया। सात वैकुण्ठों का चित्र भी अंकित किया। स्थान–स्थान पर आकर्षक प्राकृतिक दृश्यों का भी अंकित कर अत्यंत आकर्षक बनाया। अभिनय के लिए कलाकारों को प्रशिक्षण दिया। गीत–नृत्य वाद्य के लिए भी कलाकारों को प्रस्तुत किया। स्वयं गीत नृत्य वादक और अभिनय में निष्णात तो थे ही। इस प्रकार विष्णु की महिमा दर्शाने के लिए सात दिन रात को चिहण यात्रा मंचन किया गया। शंकरदेव सर्वोच्च विष्णु के रूप में अभिनय किया। हजारों की संख्या में लोग आकर अभिनय देखने लगे। अपने शिक्षा गुरु महेन्द्र कन्दली भी आए और उनको भूरि–भूरि प्रशंसा की। उसके पश्चात अनेक लोग एकेश्वर वादी वैष्णव धर्म में शरण लेने लगे। शंकरदेव की विद्वता और आलैकिक शक्ति का परिचय सबको हुआ। उनके गुरु महेन्द्र कन्दली के गाँव में सात विशाल हाथी आकर खेतों की फसल खाकर समाप्त करने लगे। गाँव के लोग किसी भी प्रकार हाथियों को भगा न सके। गुरु ने शंकर देव को बुलाया। शंकरदेव आकर देखा कि हाथी धान की खेती नष्ट कर रहे हैं। उन्होंने हाथियों को आसानी से वहाँ से भगा दिया। शंकरदेव के गाँव के पास से एक नहर थी। वर्षाकाल में उस नहर से ब्रह्मपुत्र से पानी आकर अनेक गाँवों की खेती नष्ट करता था। गाँवों के लोग नहर को बंद करने के लिए बहुत प्रयास किया पर नहर बंद करना संभव नही हुआ। सब लोग शंकरदेव के पास जाकर मदद माँगें। शंकरदेव नहर के पास गए। हजारों लोग इकट्ठा हो गए, पर सब व्यर्थ। शंकरदेव ने कहा यदि कोई सती साध्वी स्त्री पल से ब्रह्मपुत्र से पानी लाकर यहाँ डाल सकती है तो नहर बंद करना संभव होगा।

मनोरमा– पल क्या है दादाजी?

दादाजी – पल बाँस से बनाए हुए एक यंत्र है, जिससे लोग मछली पकड़ते है। उसके चारों तरफ केवल छिद्र ही छिद्र होते हैं। पल से पानी लाना असंभव बात है। लेकिन शंकरदेव इस असंभव को भी संभव कर दिखाने का प्रयास किया। लोग गाँव के कथित ऊँचे जातियों की स्त्रियों को बुलाने गए पर कोई भी पल से पानी लाने का साहस नहीं किया। सब लोग चिन्तित होकर बैठ गए। इतने में वहाँ से पति के साथ एक स्त्री गुजर रही थी। उसको जब पता चला तो वह पानी लाने के लिए तैयार हो गई। शंकरदेव प्रसन्न हो गए और स्त्री को आशीर्वाद देकर पानी लाने को कहा। प्रथम बार पल में पानी थोड़ा सा अधूरा आया। शंकरदेव ने स्त्री से कहा– माता फिर जाओ प्रभु का नाम लेकर पानी लाओ। स्त्री गई और पल में परिपूर्ण कर पानी लायी और प्रभु का नाम लेकर नहर पर डाल दिया। उधर हजारों लोग मिट्टी लेकर नहर में डालने लगे। बस नहर बंद हो गया उस स्त्री का नाम था राधिका। शंकर देव ने उपस्थित जनता से कहा– **जाति–पांति, स्पृश्य–अस्पृश्य सब मनुष्य द्वारा सृष्ट हैं। सृष्टिकर्ता केवल मनुष्य का ही सृजन किया है। देखो बड़े–बड़े कहने वाले जातियों की स्त्री जो काम नहीं कर सकी वह काम एक डोम जाति की स्त्री ने कर दिखाया। अब बताओ कौन ऊँचे हैं।** उसके पहले शंकरदेव ने सूर्यवती नामक कन्या से विवाह भी किया था और एक कन्या को जन्म भी दिया। कन्या का नाम रखा था मनु। मनु की आयु जब नौ महिने हुई तब सूर्यवती की मृत्यु हो गई। शंकरदेव उदास होकर धर्म प्रचार साहित्य सृजन में तल्लीन हो गए। धीरे–धीरे मनु बड़ी होकर विवाह योग्य बनी। शंकरदेव ने हरि नामक युवक के साथ उनका विवाह कर दिया। चलो आज समय हो गया राम, राम.....

तीनों – राम, राम.....

● **ब्रह्मसत्र तैतलिया,**
गुवाहटी (असम)

विनम्रता

प्रसंग : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

विश्व विजयी ''रूस्तमे जहाँ'' पहलवान गामा का जन्म म.प्र. के दतिया जिले में हुआ था, उनके अनुज पहलवान इमाम बख्श भी दतिया में ही जन्मे थे।

बचपन में अपनी माँ को मातन के पहरे वाले मकान में २०० से ज्यादा दंड बैठक लगाकर देखते हुए इमाम बख्श और गामा दोनों ही पहलवान बन गए। पहलवानी के शौक को संवारा-सजाया दतिया महाराज स्व. भवानी सिंह जी ने, जो स्वयं अच्छे पहलवान थे।

एक बार एक बूढ़े कसरती मुकुन्दलाल नगार्च ने गामा के साथ दण्ड लगाने की हठ पकड़ ली। गामा ने उन्हें बहुत टालना चाहा पर नगार्च न माने। सात-आठ सौ दंड लगाकर गामा एकदम से रुक गए। नगार्च ने पूछा- ''काए पैलवान, रूक काए गए। (क्यों पहलवान रुक क्यों गए)''

एक -एक दिन में पांच-पांच हजार दंड लगाने वाले गामा बोले- ''आप तो अभी भी मुझसे सवाया पड़ते हैं। (यानि आप तो हम पर भारी पड़ते हैं।) बाद में गामा ने अपने साथियों को बतलाया- यदि वे उस दिन न रुकते तो गरीब ब्राह्मण के प्राणों पर बन आती। यह छोटी सी घटना गामा के विनम्र जीवन को बतलाती है। ऐसे सैंकड़ों उदाहरण है जब गामा और उनके छोटे भाई इमाम बख्श हर व्यक्ति की मदद के लिए आगे रहते थे।

प्रसिद्ध उपन्यास लेखक स्व. वृन्दावन लाल वर्मा (झांसी) कभी गामा के वकील रहे थे। इसी तरह राष्ट्रकवि स्व. मैथिलीशरण गुप्त की पहली ससुराल दतिया थी। जहाँ पर एक भारी तिजोरी चिरगांव से दतिया आनी थी। चिरगांव में बैलगाड़ी पर इस तिजोरी को १०-१२ तगड़े आदमियों ने लादा था पर दतिया में इस भारी तिजोरी को सिर्फ गामा और इमाम बख्श ने बैलगाड़ी से उतार कर घर तक पहुंचाया था।

जीवन के अंतिम दिनों में पहलवान गामा पाकिस्तान चले गए थे। वहीं उनका निधन हो गया था। उनके बेटे असलम अकरम भी अच्छे पहलवान हुए थे।

● ग्वालियर (म.प्र.)

किससे कौन बड़ी

काका,मामा, ताऊ, फूफा, मौसा के सब लड़के, राखी बंधवाने आए हैं शुभमुहुर्त में तड़के।
बहिनों ने अपने हाथों से राखी कई बनाई किससे कौन बड़ी राखी है जरा बताओ भाई।।

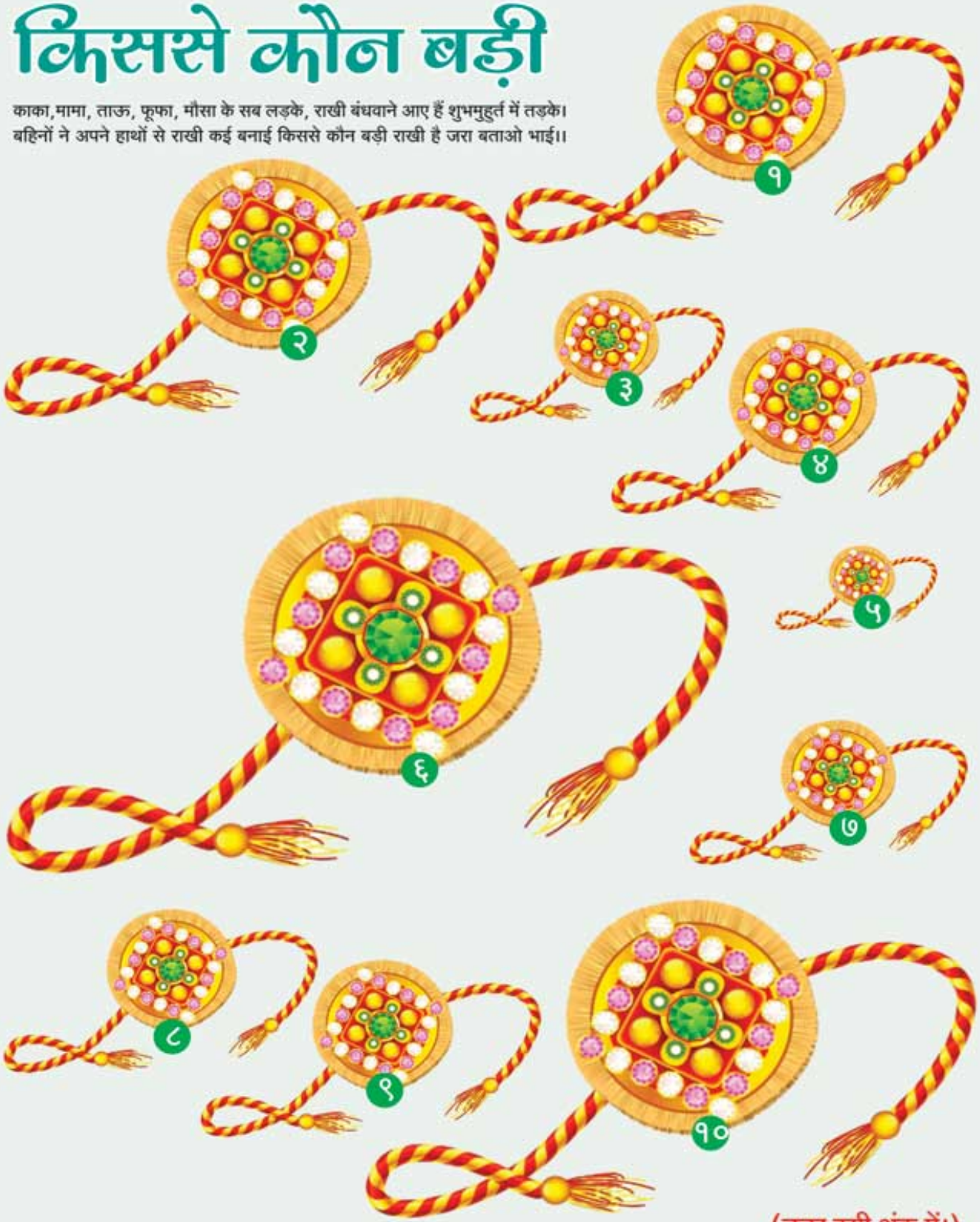

(उत्तर इसी अंक में।)

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का राष्ट्रीय वृक्ष : पैडॉक

डॉ. परशुराम शुक्ल

शानदार यह पेड़ जंगली,
मोटा तना निराला।
लम्बा चौड़ा चालिस मीटर,
तक ऊँचाई वाला।
अंडमान द्वीपों पर इसके,
जंगल पाये जाते।
उपयोगी होने के कारण,
इसको खूब लगाते।
पतझड़ वाला वृक्ष अनोखा,
अभिनव रूप दिखाता।
अपनी लकड़ी के कारण यह,
अमरीका तक जाता।
लाल रंग की लकड़ी इसकी,
काम बहुत से आती।
छत से लेकर फर्नीचर तक,
सब सामान बनाती।
अंग सभी उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते।
छोटे बड़े सभी रोगों को,
जड़ से दूर भगाते।

• भोपाल (म.प्र.)

वीर बालक नारायण

प्रसंग : साँवलाराम नामा

बात सन् १९४२ अगस्त १५ की है। कर्नाटक के हुबली शहर में स्वभाविक वातावरण था। इसी बीच महात्मा गांधी जी के भारत छोड़ो आन्दोलन 'वन्दे मातरम्' का नारा गूंज रहा था।

आसपास में पड़ोस के बच्चे खेलकूद में व्यस्त थे। उनमें से एक बच्चा आन्दोलन में जाने की आज्ञा मांगने लगा। बच्चे से माँ पूछती है– ''कहां जा रहे हो बेटे?''

''माँ मैं भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने जा रहा हूं।''

''पर बेटे वहां तो सिर्फ बड़े जाते हैं।''

''माँ भारत की सेवा करने में छोटा–बड़ा कोई भी हो तो क्या?''

इस तरह बड़े आत्मविश्वास से भरे बेटे के मुख की ओर देखते हुए माँ ने अपने बेटे को आशीर्वाद देते हुए उसे जाने दिया। भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने निकले बालक की उम्र मात्र १३ साल थी। नाम था नारायण महादेव धोनी। वह हुबली के ल्यामिंग्टन स्कूल में पढता था।

वह अपने साहस से भारत छोड़ो राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गया। उसका उत्साह और देशभक्ति देखकर वहां के बड़े–बड़े आन्दोलनकारी भी दंग रह गए। सड़क के आजू–बाजू में खड़े लोग उस वीर बालक का उत्साह व देशीभक्ति देखकर अपने आप पर घृणा महसूस कर रहे थे। बच्चे को देखकर सारे के सारे लोग आन्दोलन में कूद गए।

आन्दोलनकारियों पर पुलिस ने एकदम से गोलियों की बारिश करना शुरु कर दिया। लोग डर के मारे इधर–उधर भागने लगे। लेकिन बालक नारायण '' अंग्रेजों भारत छोड़ो'' पुकारते हुए आगे बढ़ता चला गया। वहीं कहीं से एक गोली उसकी छाती को चीरती हुई चली गई। नारायण खून में नहाकर जमीन पर गिर पड़ा।

अस्पताल में अंतिम सांस गिनते हुए वीर बालक नारायण को देखने लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। बालक नारायण भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर हो गया।

● भीनमाल (राज.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला

(१) मैनाक (२) पौण्ड्र (३) शिवाजी
(४) विजय नगर साम्राज्य (५) श्वेतवाराह
(६) गुप्तवंश (७) छह वर्ष (८) गदर पार्टी
(९) महाराणा प्रताप (१०) चाफेकर बंधु

किससे कौन बड़ी?

५, ३, ८, ७, ९, ४, २, १, १०, ६

उल्टे प्रश्नों के सीधे उत्तर

(१) सियार (२) रविवार (३) कोलतार (४) सूरत
(५) फूलगोभी (६) ३० फरवरी होता ही नहीं
(७) 'जी' (८) गीला हो जाएगा

॥ तुलसी जयंती श्रावण शुक्ल सप्तमी : १७ अगस्त ॥

तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम

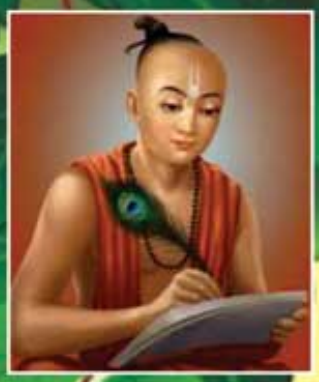

कविता : विष्णु गुप्त 'विजिगीषु'

हे! दिव्य धाम, हे! पुण्य धाम।
हे! मुक्ति धाम, शत शत प्रणाम॥
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम।

विष पीकर अमृत बाँटा था,
युग का भीषण तम छाँटा था।
दे दिया मनुज को मुक्ति मंत्र,
व्याकुल प्राणों को अभय मंत्र॥
तुम राघव के अव्यर्थ वाण।
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम॥

जीन की राह दिखाई थी,
पौरुष की सुधा पिलाई थी।
जो सुप्त पड़ा था जन मानस,
आशा की किरन जगाई थी॥
शाश्वत मन्त्रों से दिया जगा।
दे दिया हाथ में धनुष बाण॥
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम॥

युग से पीड़ित नर दीन-हीन
दुर्बल-दुकाल से मुख मलीन।
श्रम-स्वावलम्ब संस्कार जगा,
श्रुति निष्ठा की पतवार थमा॥
भवसागर पार लगाने को-
दे गए जगत को राम नाम॥
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम॥

सिकता को नन्दन वन करने,
तुम राम सुधा देने वाले।
मृत प्राणों में श्रीराम नाम
की संजीवनि देने वाले
धरती का तम हरने वाले।
आलोक पुंज तुमको प्रणाम॥
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम॥

शब्दों में राघव की प्रतिमा,
धरने वाले तुमको प्रणाम॥
तुलसी तुमको कोटिक प्रणाम॥

॥ बाल प्रस्तुति ॥

पेड़

कविता : अदिति पटेल

तुम बहुत ईमानदार हो,
कभी छुट्टी नहीं लेते।
बारिश हो या आँधी-तूफान,
सदा खड़े रहते हो।
कभी छुट्टी नहीं लेते।
तुम्हारा दिल बहुत बड़ा है।
इतने मीठे फल देने के बाद नहीं चखते,
बस हमें ही तुम देखते
अपना पेट सिर्फ धूप और पानी से ही भरते।
कभी नहीं थकते
इतने सुहानी छाँव देकर भी नहीं बैठते,
सदा खड़े रहते हो
कभी नहीं थकते।

● इन्दौर (म.प्र.)

संगठन में शक्ति

चित्रकथा - देवांशु वत्स

सच्ची मित्रता

कहानी : सुकीर्ति भटनागर

दुबला–पतला और काले भद्दे शरीर वाला वह कुत्ता सारा दिन मारा–मारा सड़कों पर घूमा करता और सड़क किनारे पड़े कूड़े के ढेर में या फिर होटलों, ढाबों के बाहर पड़े जूठन में मुँह मारता रहता। कोई भी उसे पसंद नहीं करता था। बल्कि सभी उसे देखते ही दुत्कारने लगते। बच्चे तो 'काला कलूटा बैंगन लूटा' कहते हुए उस पर पत्थर भी फेंकते।

बीमार सा दिखने वाला अपने अकेलेपन को झेलता कालू बहुत उदास और दुखी रहता। न उसने खाने–पीने का कोई ठिकाना था और न ही रहने की कोई सुरक्षित जगह। वह अक्सर बिल्लो बिल्ली के बारे में सोचता जो जब–तब चुपके से, चालाकी से कभी हलवाई तो कभी किराने वाले की दुकान में घुस जाती और अपनी मनपसंद चीजों पर हाथ साफ करती रहती। उसने बहुत बार बिल्लो से कहा कि वह कभी कभार ही सही उसके लिए भी खाने की कोई चीज ले आया करे ताकि उसका भी पेट भर सके, पर वह उसकी एक न सुनती और ''परे हट, परे हट'' कहते हुए उससे कन्नी काट लेती। कोई भी तो नहीं था उसका जो उसके दुखते घावों को सहलाता।

एक शाम हमेशा की तरह वह शहर के जाने माने सेठ करोड़ीमल की आलीशान कोठी के सामने से गुजर रहा था कि उसे किसी दूसरे कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनाई दी। उसने मुड़ कर देखा तो कोठी के बड़े से फाटक पर खड़ा एक रेशमी बालों वाला झबरा कुत्ता उसे बुला रहा था।

''क्या तुमने मुझे पुकारा?'' कालू ने उससे पूछा।

''हाँ, मैंने ही तुम्हें बुलाया है। मेरा नाम मोती है और मैं इस कोठी में रहता हूँ।''

''अरे वाह, फिर तो तुम्हारे मजे ही मजे हैं। अच्छा खाना–पीना, रहना और ए.सी. में सोना। मतलब कि सब अच्छा ही अच्छा।'' कालू ने बाहर से ही कोठी का मुआयना करते हुए कहा।

''हाँ भाई सब अच्छा है। हर प्रकार की सुविधा है यहां। पर तुम नहीं समझोगे मेरे दर्द को। सारा दिन अकेले रहते–रहते मैं तंग आ गया हूं। मालिक के दोनों बच्चे सुबह विद्यालय चले जाते हैं और मालिक–मालिकन काम पर, जो शाम को ही घर लौटते हैं और आते ही अपने कामों में लग जाते हैं। बच्चे भी कहां खेलते हैं मुझसे। विद्यालय से लौटकर भोजन करने के बाद अपना गृहकार्य करते हैं और अपने खाली समय में टी.वी. देखने लगते है। मैं भी उनके पास बैठा टी.वी. देखता रहता हूँ और उनके साथ साथ में भी बैठे बैठे खाता पीता रहता हूं तभी तो इतना मोटा हो गया हूँ। वैसे भी एक ही तरह की दिनचर्या से ऊब होने लगी है। कोई तो चाहिए न बातचीत करने के लिए। बंसी काका हैं जो मुझे नहलाते, धुलाते और खाना खिलाते हैं

थोड़े समय के लिए घुमाने भी ले जाते हैं। वह भी जंजीर में जकड़ कर। क्या करूं कुछ समझ नहीं आता। तभी तो यहां दरवाजे पर खड़ा आते–जाते लोगों को देखता रहता हूँ। तुम्हें भी बहुत बार यहां से गुजरते हुए देखा, पर बात नहीं कर सका। डरता हूँ कि कहीं घर वाले तुमसे बात करता देख मुझसे नाराज न हो जाएं पर आज तो हिम्मत करके तुम्हें आवाज दे ही दी। क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?'' मोती ने पूछा।

''पर मैं तो मरामराया–सा गंदगी में घूमने वाला सड़क का कुत्ता हूं और तुम अमीर घर के सुन्दर, स्वस्थ और साफ–सूथरे रहने वाले राजसी कुत्ते हो। मेरी तुम्हारी दोस्ती कैसे हो सकती है? वैसे भी तुम्हारे मालिक मुझे यहाँ देखेंगे तो हड़का देंगे या मार–मार कर मेरी हड्डी–पसली एक कर देंगे। मुझे तो जाने ही दो भाई'' इतना कह कालू वहां से जाने लगा तो मोती ने उसे रोकते हुए कहा– ''कालू भाई, यह तुमसे किसने कह दिया कि अमीर और गरीब की दोस्ती नहीं हो सकती। दोस्ती तो आपस में एक दूसरे का मन मिलने से होती है, जहां ऊंच–नीच और सुन्दर–कुरूप होना कोई मायने नहीं रखता। तुम मुझे अच्छे लगे तो बस मेरे दोस्त हुए, मंजूर।''

''हाँ मंजूर।'' मोती के मन की सरलता देख कालू पिघल गया और फिर वे देर तक इधर उधर की बातें करते रहे। अब तुम जाओ कालू। घरवाले आते ही होंगे। हाँ, कल से सभी के जाने के बाद तुम यहाँ आ जाया करो, तब तक घर का नौकर बंसी भी सभी काम निपटाने के बाद ए.सी. में पैर फैला कर सो जाता है या फिर टी.वी. देखता रहता है। वही ठीक समय है हम दोनों का आपस में हँसने–बोलने का, खाना–पीने का।''

''ठीक है मोती, मैं आ जाया करूंगा। वैसे भी मैं यही आस–पास ही घूमता रहता हूं। मैदान साफ होता देख हाजिर हो जाऊंगा।'' खुशी से माथे पर हाथ ठोकता हुआ कालू बोला तो मोती को भी हँसी आ गई।

मोती क्या मिला कालू के तो दिन ही बदल गए। कोठी के अंदर–बाहर हर तरह के छायादार वृक्ष लगे थे। मौका देखते ही कालू वहां पहुंच जाता और बाहर गुलमोहर की सघन छाया में खड़ा मोती से बतियाता रहता। मोती भी अपने खाने में मिली सभी चीजें उसे खिलाता, पिलाता रहता इस तरह उसकी सेहत भी पहले से सुधर गई। दिन मजे से निकल रहे थे, पर एक दिन मालिक कुछ जल्दी ही घर लौट आए और मोती को कालू से बातें करता देख उस पर बरस पड़े। बंसी को भी यह बात अच्छी तरह से समझा दी गई कि मोती को उस गली के कुत्ते के सम्पर्क में न आने दें, क्योंकि ऐसा होने पर मोती संक्रमणग्रस्त हो सकता है। अब बंसी की गिद्ध–दृष्टि हर समय मोती पर ही लगी रहती, फलस्वरूप दोनों मित्र का आपस में मिलना बहुत कठिन हो गया। फिर भी इस आस में कि शायद कभी मोती से बात हो ही जाए कालू देर–सवेर कोठी के आस–पास मंडराता रहता।

वह पूनम की एक उजली रात थी। कालू बहुत उदास और बेचैन था। उसे नींद भी नहीं आ रही थी। हालांकि रात के दो बज रहे थे फिर भी वह मटरगश्ती करते हुए मोती के घर के सामने से निकला और कुछ देर फाटक के पास खड़ा इधर–उधर देखता रहा। तभी उसे कोठी की बालकनी पर दो आदमी दिखाई दिए जो शायद

किसी पाईप के सहारे ऊपर चढ गए थे और अब तक किसी कमरे में घुस गए थे। 'कहीं ये चोर तो नहीं' उसने सोचा और जोर–जोर से भौंकने लगा पर किसी ने भी उसकी आवाज नहीं सुनी। कुछ तो करना ही होगा। उसने सोचा और भौंकते हुए ही कोठी का पूरा चक्कर लगा आया। पिछली ओर बंसी का कमरा था कालू के लगातार भौंकते रहने से उसकी नींद खुल गई तो उसने कोठी का पिछला गेट खोल कर बाहर देखा। उसी समय कालू फुर्ती से अंदर घुस आया और बंसी का पायजामा पकड़ उसे एक ओर को ले जाने की कोशिश करने लगा। अचानक ऐसा होता देख बंसी डर गया और उसने फौरन मोबाईल पर अपने मालिक से बात की। कुछ ही देर में घर के सभी सदस्य जाग गए, तब खतरे को भांपते हुए दोनों चोर हड़बड़ाए, घबराए से पुनः बालकनी से होते हुए भाग खड़े हुए। यह देख कालू भी उनकी ओर दौड़ा और भागते हुए एक व्यक्ति की टांग पकड़ ली, जिसे बाद में पुलिस वालों को सौंप दिया गया।

उन चोरों ने मोती को बेहोश करने के बाद घर में चोरी करने की योजना बनाई थी किन्तु कालू की हिम्मत और समझदारी से सभी चीजों सहित घर वाले भी सुरक्षित थे। कुछ ही देर में मोती को भी होश आ गया। तब सब ठीक–ठाक हुआ देख कालू वापिस जाने लगा तो मालिक ने उसे सहलाते हुए कहा– ''कालू, आज तक हम सभी तुम्हारा अनादर करते रहे, तुम्हारा मजाक उड़ाते रहे, तुम्हारी और मोती की मित्रता के आड़े आते रहे, फिर भी तुमने मोती से अपनी मित्रता निभाते हुए, अपनी जान की परवाह किए बिना, हमारी जान–माल की रक्षा की। तुम्हारा बहुत–बहुत धन्यवाद कालू। आज से तुम्हारी और मोती की दोस्ती हमें मंजूर है। तुम चाहो तो हमारे साथ ही रह सकते हो।'' यह सुन कालू के सामने मोती का उदास चेहरा घूम गया, जो सब सुख–सुविधाओं के होते हुए भी खुश नहीं था क्योंकि वह अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं कर सकता था।

''क्या सोच रहे हो कालू!'' मालिक ने पूछा।

''यही कि, मुझे बहुत खुशी हो रही है यह जानकर कि आपने मेरी और मोती की दोस्ती को स्वीकार किया। लेकिन मैं यहाँ रहूंगा नहीं, क्योंकि मैं जंजीर में बंध कर नहीं, आजादी से जीना चाहता हूँ पर हाँ अपने मित्र मोती से मिलने हर दिन आता रहूंगा। क्योंकि सच्ची मित्रता तो अनमोल होती है।

● पटियाला (पंजाब)

दोनों चित्रों में आठ अंतर बताओ

- देवांशु वत्स

(उत्तर इसी अंक में)

घंटी की महिमा

आलेख : राजेश गुजर

घंटी या घंटा भारत में आदिकाल से प्रयोग में आ रहे हैं। इनका उपयोग मंदिर में देवी–देवताओं का ध्यान आकर्षित करने एवं आरती के समय बजाने में किया जाता है। शास्त्रों–पुराणों में कहा गया है कि प्रातः काल व सायंकाल देवालयों में पूजन के समय घंटानाद (ध्वनि) करना चाहिए। इसके बाद इसको पूजना चाहिए। घंटा या घंटी जैसे वाद्य बजाने पर जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसे 'ध्वंकृत' कहते हैं।

इसकी ध्वनि से घर का वातावरण पवित्र व शुद्ध होता है। घंटी का आकार एक मंदिर के अर्द्धशिखर की तरह होता है। जो भीतर से खाली होता है। हाथ में पकड़कर बजाने वाली घंटियों में ऊपर एक दण्ड होता है, जिस पर गरूड़ जी या हनुमान जी या चक्र विराजमान होते हैं। घंटा–ध्वनि पेड़–पौधे और वनस्पति तक को जगाने का कार्य करती है। कांस्यताल (झाल), मँजीरा, घटिका (घड़याल), जय–घंटिका (विजयघंट), क्षुद्रघंट (पूजा की घंटी) ये घंटे के भेद माने गए हैं।

काष्ठ से निर्मित घंटियों को खटखटा, टापर, टापुर कहते हैं। पीतल से निर्मित घंटियों को कसाट, घुघरा तथा लौह से निर्मित घंटियों को ठिनठिनी, ठोणी या ढुणढुणी कहते हैं। भगवान शिव, विष्णु तथा भगवती को घंटी बहुत प्रिय है। देवी भगवती के हाथों में यह प्रतीक वाद्य माना गया है। ऐसा माना जाता है कि घंटा ध्वनि से निकलने वाला स्वर 'ओंकार' है। गणेश और भगवान भैरव की कमर में घंटियों का शृंगार है। मिस्र के वृषभदेव 'ऐटिस' के गले में भी घंटी बाँधी गई है। घंटी का संबंध सबसे पहले भगवान शिव के साथ कैलाश पर्वत पर रहने वाले गणों से मिलता है। घंटाकर्ण शिवजी के एक गण का नाम है, जिसके कान घंटाकार थे। 'नंदी' शिव के दूसरे गण हैं जो उनके वाहन हैं, उनके गले में घंटी बँधी होती है। घंटी की उत्पत्ति कथा शिव–पार्वती व नंदी से जुड़ी है– जब नंदी के गले में घंटी नहीं बँधी थी। उस समय की बात है, नंदी अपने स्वभाव के कारण कैलाश पर्वत से कहीं दूर चले गए। शाम हो गई, तब नंदी नहीं लौटे तो शिवजी ने पार्वती जी से कहा– ''नंदी कहा है?'' पार्वती जी ने अनभिज्ञता प्रकट की। सब जगह ढूँढने पर भी नंदी का जब पता नहीं लगा तो शिवजी परेशान हो गए। शाम हो गई थी, सूर्यास्त होने जा रहा था। फिर नंदी को आते शिवजी ने देखा वे नाराज हुए, सारा गुस्सा नंदी पर बरसा दिया। इतने में पार्वती जी बाहर निकली, उनसे शिवजी ने शिकायत करते हुए कहा– ''पार्वती! इसे आज से बाँधकर रखा जाए। इसके गले में रस्सी लगाओ।

पार्वती जी ने कहा– ''भगवन्! इस प्रकार तो हम नंदी को कैद में डाल देंगे उसकी स्वतंत्रता छीनने का अधिकार हमें नहीं है। महादेव का गुस्सा दुगुना हो गया और बोले– ''पार्वती, इसको वश में रखने का कोई उपाय तुम्हारे पास है तो बताओ।''

पार्वती ने कहा– ''इसका उपाय है मेरे पास प्रभु।'' ''वह

क्या है?'' महादेव जी पूछा। पार्वती जी ने कहा– ''नंदी के गले में हम बजने वाली घंटी डाल दें तो कैसा लगेगा, उसके चलने से घंटी बजती रहेगी और वह कहाँ है, इसकी सूचना भी हमें मिलती रहेगी।'' पार्वती जी ने लकड़ी की बजने वाली घंटी बनवाई और उसे रस्सी के सहारे से नंदी के गले में बाँध दी। अब नंदी जहाँ–जहाँ जाते, उनके गले की घंटी 'टन–टन' बजती रहती। जिससे महादेव को भी पता लगता रहता कि नंदी कहीं न कहीं आसपास ही है।

इस प्रकार पहली 'काष्ठ घंटी'' का निर्माण हुआ। आज भी कई मवेशियों के गले में लकड़ी की घंटी जिसे 'टापरी' कहा जाता है, बाँधी जाती है। धातु युग में लौह, पीतल, ताँबे, काँसे, चाँदी व सोने की घंटियाँ बनने लगी। बाद में मंदिरों में मूर्तियों के साथ पत्थर पर मंदिर की शोभा के लिए घंटी वाले वृषभ, नंदी की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की जाने लगी। खासकर शिव मंदिर के सभा मंडप में बैठे और खड़े नंदी के गले में घंटी व घंटी की माला को उत्कीर्ण होने लगी थी। मंदिर के सभा मंडप का आकार इसीलिए घंटी के भीतरी गोलाई की तरह होता है। और घंटा–ध्वनि वलय के साथ अधिक गूँज उत्पन्न करती है यह मनुष्य के अवचेतन मन को जगाने का कार्य करती है। घंटा–ध्वनि मंदिर और शरीर में बहुत समय तक समायी रहती है, सभा मंडप व मंदिर का गर्भगृह इसीलिए घंटी के आकार के बनाए जाते हैं। घंटी या घंटा समय का प्रतीक भी है। जब जल घंटियों की घड़ियों के समय नापने का चलन था तब घंटा बजाकर समय की सूचना दी जाती थी। इसे 'पहर बजाना' कहते थे। हिन्दू, बौद्ध, जैन, इसाई धर्म में घंटे का महत्व है, भारत के अलावा चीन, बर्मा, जापान, मिस्र, यूनान, रोम, फ्रांस, रूस, इंग्लैंड आदि देशों में भी घंटे का उपयोग प्राचीन काल से है। जब आधुनिक घड़ियों का जमाना आया तब घड़ियों में धंटा ध्वनि उपकरण लगाए गए। 'अलार्म' घंटा–ध्वनि का परिवर्तित रूप है। पुराणों में कहा गया है कि शंखनाद, दुदुंभिनाद या घंटानाद करके देवालय का द्वार खोलना चाहिए। बिना नाद, द्वार खोलना अपराध बताया गया है।

● महेश्वर (म.प्र.)

सही उत्तर | अन्तर बताओ

(१) खिड़की में एक ही कील है (२) पैराशूट का आदमी नहीं दिख रहा
(३) पापा की मूंछे कम घनी है (४) उनकी आंख में भी अंतर है
(५) उनकी एक ही टांग दिख रही है (६) लड़की के चेहरे के भाव में अंतर है
(७) उसकी शर्ट में कम धब्बे हैं (८) मेज छोटा है

बड़ा और शक्तिशाली

बृहस्पति

बृहस्पति हमारे सौर-मंडल में सूर्य के बाद सबसे बड़ा और अत्याधिक गुरुत्वाकर्षण वाला सदस्य है. इसका व्यास है 182,800 किलोमीटर.

सचित्र प्रस्तुति- संकेत गोस्वामी

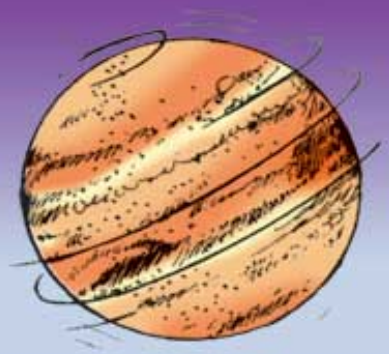

यह अपनी धुरी पर सर्वाधिक तेज गति से घूमता है. पृथ्वी के 9 घंटे 55 मिनट में इसका एक दिन पूरा हो जाता है.
यह अपने अक्ष पर 3.1 डिग्री झुका हुआ है. सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में इसे 11.86 वर्ष लगते हैं.

वैज्ञानिकों का मानना है कि अंतरिक्ष में भटकी ग्रहिकाएं और उल्का पिंड इसके प्रबल गुरुत्वाकर्षण से खिंचकर इसमें मिल जाते हैं और वहीं नष्ट हो जाते है.
इस तरह यह अन्य सभी सौर मंडल सदस्यों को सुरक्षा प्रदान करता है.

बृहस्पति पर कोई धरातल नहीं है. वहां के वातावरण में 90 प्रतिशत हाइड्रोजन है और अमोनिया और मीथेन जैसी जहरीली गैसें भी है. इसका तापमान 0 से 238 डिग्री कम है क्योंकि यह सूर्य से बेहद दूर है. (करीब 7,780 लाख किलोमीटर.)

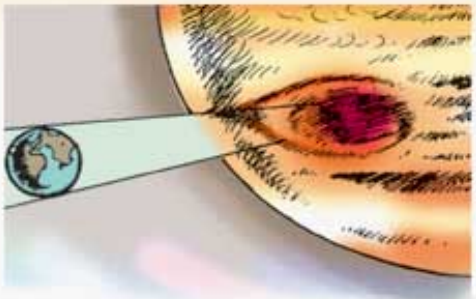

विशिष्ट लाल धब्बा बृहस्पति की पहचान है. यह पहली बार 17वीं शताब्दी में देखा गया था. यह बृहस्पति का एक प्रचंड तूफानी अंधड है,जो कभी इतना बड़ा स्थान रहा है कि इसमें करीब 3 पृथ्वियां समा जाएं.

रेड स्पॉट के अंदर 400 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से काऊंटरक्लॉक हवाएं चलती हैं. यहां बेहद दबाव है, जहां से हवा उठती है. कारण बृहस्पति पर कोई धरातल तो है नहीं वहां मौजूद 90 प्रतिशत हाइड्रोजन की उपस्थिति भारी उथल-पुथल मचाती है.

लेकिन यह बहुत कम लोगों को पता है कि अब ये रेड स्पॉट सिकुड़ कर लगातार छोटा हो रहा है...1878 से यह रेड-स्पॉट लगातार अवलोकन पर है. नासा के दो वायेजर अंतरिक्ष यानो ने 1979 से इसकी निगरानी के विवरण दिए हैं.

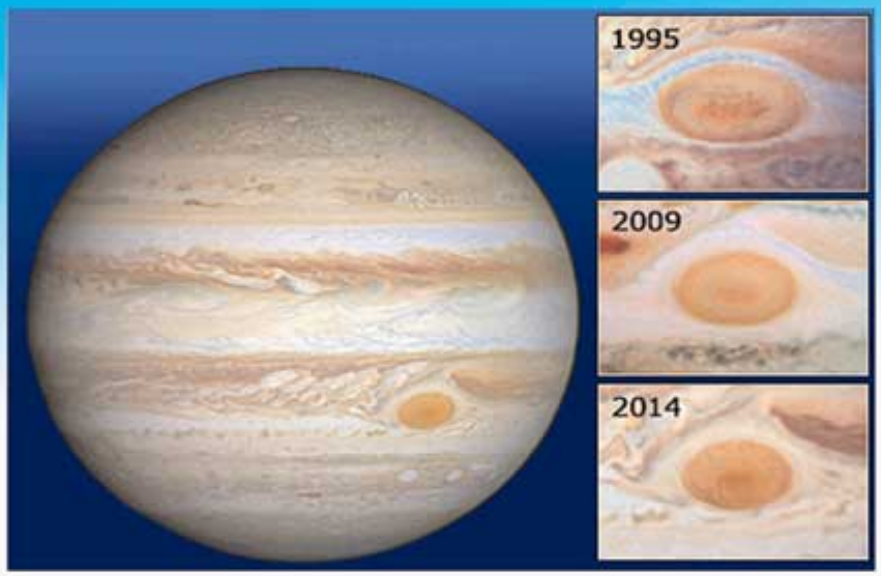

1995, 2009 और 2014 के रेड-स्पॉट के चित्रों से यह साफ दिख रहा है कि यह धब्बा किस तरह अपना आकार खो रहा है. माना जा रहा है कि यह प्रतिवर्ष 500 मील छोटा हो रहा है. अब यह अंडाकार से गोल होता जा रहा है. खगोल शास्त्रियों को भी इसकी वजह नहीं समझ आ रही पर उनका अनुमान है कि इस ग्रह के अंदर कोई ऐसी क्रिया चल रही है जो इसके अंधड की ऊर्जा को लगातार सोख रही है और यह कमजोर पड़कर सिकुड़ रहा है.

इसके ज्ञात चंद्रमाओं में से यूरोपा, कल्लीस्टो, गनीमेड, आइओ बड़े आकार के उपग्रह हैं जिनका व्यास 3 हजार किलोमीटर से भी कहीं अधिक है.

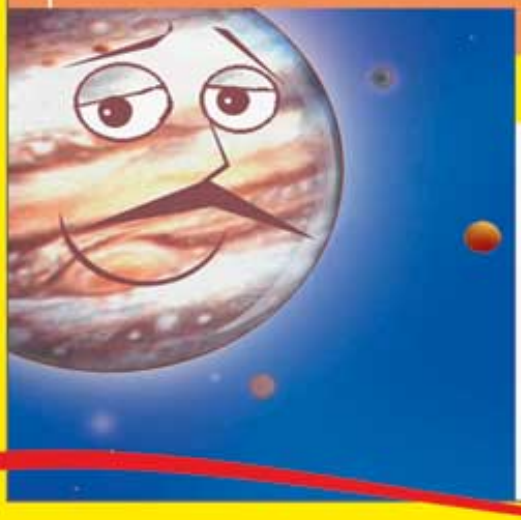

बृहस्पति हमारी पृथ्वी से 1300 गुना बड़ा है और यदि हमारे सौर -मंडल के सभी ग्रह एक साथ ठूंस दिए जाएं तो भी इसका आकार उनसे बड़ा ही होगा. क्यों कि ये है ही बड़ा और शक्तिशाली.

समाप्त

।। श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत कहानी ।।

बाल प्रस्तुति

संस्कार है अनमोल

कहानी : योगेन्द्र साहू

रमेश और कुशल दोनों विद्यालय में एक साथ पढ़ते थे, उसी दौरान वे अच्छे दोस्त बन गए। विद्यालय समय में कुशल रमेश से होशियार था इस वजह से रमेश कुशल से मन ही मन जलता था। रमेश के पिता एक बड़े व्यवसायी थे परन्तु कुशल एक साधारण परिवार का था। दोनों की पढ़ाई पूरी हो गई। पढ़ाई पूरी करने के बाद रमेश ने अपने पिता की मदद से एक बड़ा व्यापार शुरु किया और जल्द ही उसमें सफलता प्राप्त कर ली, कुशल की आर्थिक स्थिति ठीक ना होने के कारण उसे एक क्लर्क की नौकरी करनी पड़ी। जब रमेश को पता चला कि कुशल क्लर्क की नौकरी कर रहा है तो उसे अपने आप पर अहंकार आ गया, वह जब भी कुशल से मिलता था उससे सीधे मुँह बात तक नहीं करता था। परन्तु कुशल इस व्यवहार का बुरा नहीं मानता था। कुछ समय बाद दोनों की शादी हो गई। दोनों को एक साथ पुत्र की प्राप्ति हुई। कुशल ईमानदार, मेहनती, समझदार व संस्कारी था रमेश में भी वे सारे गुण थे पर उसका अहंकार उन सारे गुणों को छुपा देता था। कहते है न कि मानव में विद्यमान एक बुराई उसकी सारी अच्छाई को मिटा देती है। यही बात रमेश के जीवन में भी चरितार्थ साबित होती थी। रमेश ने अपने बेटे का नाम विवेक रखा और कुशल ने अपने बेटे का नाम विनोद रखा। कुशल ने अपने बेटे विनोद को अच्छी शिक्षा दी, उसे अच्छे संस्कार दिए, उसे बड़ों की इज्जत करना सिखाया। रमेश अपने छोटे विवेक की परवरिश पर ध्यान नहीं दे पाया। रमेश अपने व्यापार में इतना व्यस्त हो गया था। समय के साथ साथ रमेश का बेटा जिद्दी होता गया, बढ़ती उम्र के साथ–साथ उसकी

जिद्द भी बढ़ती गई और वह अपने धन के गुरूर में इतना घमंडी हो गया कि अपने बड़ों का आदर तक न करता। कुशल का बेटा विनोद बड़े विनम्र स्वभाव का था अपने गुणों के कारण वह धीरे–धीरे तरक्की करने लगा विनोद ने अपने व्यवसाय को अपनी मेहनत से बहुत बड़ा कर लिया। किन्तु विवेक ने अपने पिता के व्यवसाय को पूरी तरह डुबो दिया। अब वह अपने पिता का भी सम्मान नहीं करता था। अब तो उसने अपने पिता को घर से ही निकाल दिया। रमेश ने अपने बेटे द्वारा घर से निकाले जाने पर वह कुशल के घर पहुंचा वहां विनोद ने उसका स्वागत किया उसका अभिवादन किया व ससम्मान उसे घर के अंदर ले गया। अपने बेटे द्वारा घर से निकाले जाने के बाद अपने बेटे से इज्जत न मिलने पर उसे दूसरे के बेटे से क्या उम्मीद थी पर उम्मीद के विपरीत जब उसके बेटे विनोद ने उनका अभिवादन किया तो उसकी आँखें भर आई। जब वह कुशल से मिला तो उसके आँखों में पश्चाताप के आँसू थे, रमेश ने अपने किए व्यवहार के लिए कुशल से माफी मांगी और कुशल से कहा– ''आज मुझे संस्कारों की कीमत समझ में आई हैं। सचमुच संस्कार पैसे से नहीं खरीदे जा सकते संस्कार अनमोल हैं।

● नवागढ़ (छ.ग.)

गिनो और बताओ

बच्चो, नीचे बने सर्पों में ज्यामितीय आकृतियाँ वृत्त, वर्ग, आयत, चतुर्भुज, त्रिभुज किसमें कितने हैं, गिनो और बताओ?

● राजेश गुजर

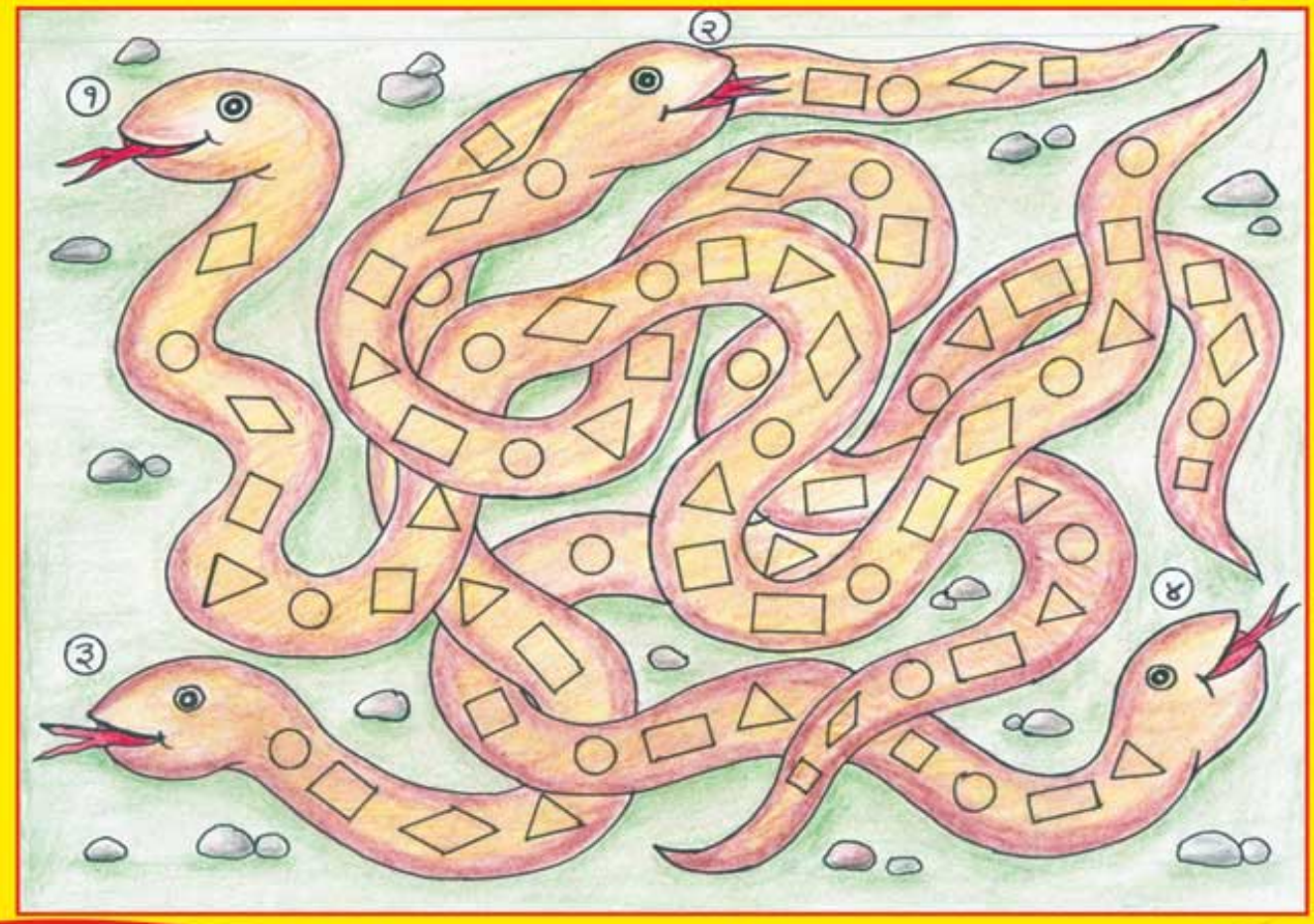

१५ अगस्त

कविता : रामगोपाल 'राही'

व्यापारी बन बैठे शासक
की उनने गद्दारी थी।
अपने देश में अपना शासन
उनसे मांग हमारी थी।।
उस समय की विस्मय वाली
सच्चाई कुछ ऐसी थी।
अपना देश विदेशी शासन
घात यह उलझन जैसी थी।।
आज़ादी का इतिहास सच,
बलिदानों की गाथा है।
बलिदान संघर्ष निरंतर
यह इतिहास बताता है।।
स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध में
महानायक बलिदान हुए
जागी जनता लिया मोर्चा
क्रांति और रुझान हुए।।
लहर उठी स्वदेश प्रेम की,
बंदे मातरम गीतों से।
हुई चेतना गाँव शहर में
प्रातः झंडा गीतों से।।
भारत माँ के जयकारो संग
स्वतंत्रता का नारा था
बुलंद हौसले हाथ हथकड़ी
जज़्बा जोश नज़ारा था।।
दमन चक्र था, फांसी हथकड़ी,
सहे पीठ पर कोड़े थे
देश भक्त कई कुचल दिए थे
दौड़े उन पर घोड़े थे।।

जलियाँ वाला बाग की घटना
निर्दोषों को मारा था।
लाशों के अम्बार लगे थे
दहला भारत सारा था।।
अंग्रेज़ों के विरुद्ध देश में
क्रोध में ज्वाला भड़की थी।
रोम रोम में जोश, फड़क थी
लगा बिजलियाँ कड़की थी।।
देश हितों में ठौर ठौर पे
संघर्ष आव्हान हुए।
राजगुरु-सुखदेव-भगतसिंह
फाँसी चढ़ बलिदान हुए।।
देशभक्त कई क्रांतिकारी
देश के नेता जेल गए।

सावरकर से देशभक्त कई
सच प्राणों पे खेल गए।।
अंग्रेज़ों को चैन नहीं था
पल पल में हैरानी थी।
सत्याग्रह ब आंदोलन ने
लिखी नई कहानी थी।
गए फिरंगी छोड़ के भारत
परतंत्रता का अंत हुआ।
पन्द्रह अगस्त खुशी का दिन
स्वतंत्र भारत देश हुआ।।

• लाखेरी (राज.)

हमारी भी सुनो

कहानी : शकुन्तला पालीवाल

आज इतने समय बाद हरियल तोते को जंगल में देख कर सब बहुत खुश हुए। हरियल तोता जब छोटा था तभी उसके माता–पिता गुजर गए थे, मगर उसे सभी जंगलवासी बहुत प्रेम करते थे। चाहे मीकू खरगोश हो या भोलू भालू, नटखट गिलहरी हो या जंबो हाथी। वो सबकी आँखों का दुलारा था, शरारती होने के साथ बहुत होशियार भी था। हर चीज को बहुत जल्दी समझ जाता और उसे दुहरा कर सबको हैरत में डाल देता। एक दिन वो जंगल से ऐसे गायब हुआ कि फिर वो कभी नजर नहीं आया। और आज यूं अचानक जंगल में उसके आने से सभी बहुत खुश थे। वैसे तो सभी जंगलवासी बहुत परेशान थे फिर भी सब खुशी–खुशी हरियल तोते से मिले।

सभी ने एक स्वर में हरियल तोते से पूछा– ''तुम कहाँ गायब हो गये थे? क्या हमारी कभी याद नहीं आई?'' हरियल तोते ने बोलना शुरु किया– ''एक रात जब में अपने कोटर में सो रहा था तब कुछ शिकारियों ने मुझे दबोच लिया, वो मुझे कैद कर के ले गए। बाद में उन्होने मुझे एक आदमी को बेच दिया। उसने मुझे इंसानों की तरह बोलना सिखाया, मैंने सब कुछ बहुत जल्दी ही सीख लिया। वो छुट्टियों में किसी हिल स्टेशन या जंगल में घूमने जाता तो मुझे भी अपने साथ जे जाता। वो कहता कि शहरों में प्रदूषण बहुत बढ़ गया है और जंगल में शुद्ध और ताजी हवा मिलती है। मौका पाकर मैं जंगल लौट आया। अब मैं तुम सबके साथ यही रहूंगा।'' उसकी बात सुनकर सभी बहुत खुश हुए। वो बोला– ''तुम सब किसी बात से उदास दिखाई दे रहे हो, क्या बात है?'' सभी ने टालने की कोशिश करते हुए कहा– ''नहीं, नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।'' लेकिन हरियल तोता अड़ गया, कहने लगा– ''अगर तुम मुझे नहीं बताओगे तो मैं यहां नहीं रहूंगा।''

थक हार कर झबरू तेंदूए ने बोलना शुरु किया – ''दोस्त! हम सभी मनुष्यों के कारण में है, वो जंगल तक पहुंच गया है, उसको अपने लिए घर बनाने हैं तो वह जंगल खत्म कर रहा है और जब हम कहीं घूमते या पानी पीते दिख जाते है तो वह हमें निशाना बनाता है मेरे भाई को तो उसने मार ही दिया। जब हम उसके घर में नहीं घुसते तो क्यों वह हमारे घरों में घुसता है?'' यह कहते हुए वह फूट–फूट कर रोने लगा। उसे रोता देख सबकी आँखें नम हो गई। हरियल बोला– ''मैं अपने मालिक के घर रोज टी.वी. देखता था और रेडियो भी सुनता था, इससे मुझे देश विदेश की सब खबरे मिलती थी, टी.वी. में बताया गया कि इंसानों की जनसंख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है...'' उसकी बात बीच में काटते हुए जंबो हाथी

बोला– वे अपनी जनसंख्या बढ़ा कर हमारे घर क्यूं खत्म कर रहे है, यह प्रकृति सबकी माता है, अकेले उन मनुष्यों की नहीं। उनने कितने हरे भरे पेड़ काट दिए हैं, और जानते हो, तुम्हारे माता–पिता की मौत के जिम्मेदार भी ये इंसान ही हैं। इन्होंने न जाने कितने पंछियों को मारा और कितनों को अनाथ किया?'' यह सुनकर नीलू मोर की आंखों में भी आंसू आ गए। वह बोला– ''इस मनुष्य के कारण से ही मेरी पत्नी मर गयी।

इस बात से हरियल बहुत दुःखी हुआ। वह हिम्मत जुटा कर बोला–''नीलू मामा! तुमको तो इंसान ने राष्ट्रपक्षी घोषित किया है, तो कोई मोर का शिकार करता है, उसे कड़ी सजा मिलती है।'' ये बात सुनकर सभी को बहुत आश्चर्य हुआ। हरियल बोला–''अरे, आप मेरी बात का विश्वास कीजिये, मानव जन सुनवाई कार्यक्रम करता है। जिसमें कोई भी जाकर अपनी शिकायत दर्ज करवा सकता है। उसकी समस्या का समाधान जल्दी ही हो जाता है। सबके चेहरे पर चमक आ गई। ''तो क्या हम भी अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते है?'' जीतू जिराफ ने पूछा। ''हाँ, बिल्कुल।'' हरियल ने जबाब दिया। तभी गोलू भालू ने हरियल से कहा– ''हम तुम्हें अपना मुखिया बनाते है, तुम हमारी बात जन सुनवाई में पहुंचा दो।'' ''हे, मानव! आखिर हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा ? जो तुम हमारा घर उजाड़ देते हो? जनसंख्या तुम बढाते हो और परिवार हमारे खत्म करते हो, यह धरती माँ तुम अकेले की तो नहीं है, हमारा भी समान अधिकार है, अब भी संभल जाओ नहीं तो बाद में बहुत पछताओगे।'' नटखट गिलहरी ने यह पत्र तैयार कर सबको सुनाया। सभी ने सहमति से यह पत्र जिम्मेदारी के रूप में हरियल को सौंपा। नन्हा हरियल जंगलवासियों की समस्या लेकर जनसुनवाई केन्द्र की तरफ उड़ चला।

● उदयपुर (राजस्थान)

अब थोड़ा हँस लें

● विष्णुप्रसाद चौहान

बेटे ने अपने पिता से कहा- पिताजी मुझे चाकलेट दिला दो।
पिता बोले- बेटे चाकलेट खाने से दांत खराब हो जाते हैं।
बेटे ने कहा- लेकिन पिताजी! जब पिछले साल में दांत खराब हुए थे तो आप ने तो कहा था और खा चाकलेट।

****

रेल्वे स्टेशन पर एक यात्री ने कुली से पूछा- भाई साहब पूछताछ कार्यालय कहाँ है?
कुली ने जवाब दिय-''मुझे भी नहीं पता! आगे जाकर लेफ्ट साइड में इन्क्वायरी ऑफिस है वहाँ पता करो।

****

पति- ये कैसी दाल बनाई है? ना नमक है ना मिर्च है, बिल्कुल फीकी है। तुम सारा दिन मोबाइल में लगी रहती हो, कुछ पता नहीं चलता क्या डालना है क्या नहीं?
पत्नी (बेलन दिखाते हुए)- पहले तुम मोबाइल साइड में रखकर खाना खाओ, कब से देख रही हूँ, पानी में डुबो डुबो कर रोटी खा रहे हो।

****

शिक्षक- कल मैं सूरज पर भाषण दूंगा। कोई भी छुट्टी नहीं मनाएगा।
सोनू- मैं नहीं आ पाऊंगा।
शिक्षक - क्यों?
सोनू - मेरी माँ इतनी दूर नहीं जाने देगी।

****

एक दुकानदार अपने ग्राहक की शादी में गया और खाना खाने के बाद लिफाफा पकड़ा के आ गया। दूसरे दिन ग्राहक ने सभी लिफाफे खोले और दुकानदार के लिफाफे में एक हिसाब की पर्ची निकली
पिछला बकाया - ८००
शादी के जमा - १००
टोटल बाकी - ७००

● ढबला हरदू (म.प्र.)

आपकी पाती

● कुलभूषण कालड़ा, पटियाला (पंजाब)

आप की पत्रिका बच्चों के लिए बहुत ही उपयोगी पत्रिका है जिसमें मनोरंजन के साथ-साथ बहुत सी सामग्री ज्ञानवर्धक भी होती है। आप की संपादकीय विशेष रूप से हर बार बच्चों हेतु नई नई जानकारी लिए होता है। बधाई स्वीकारें।

*****

● डॉ. गोपाल 'राजगोपाल'

बाल साहित्य के क्षेत्र में देवपुत्र पत्रिका का एक मुख्य स्थान है। इसका प्रमाण यह है कि गत दिनों मैंने आपके कार्यलय में फोन कर पत्रिका संबंधी जानकारी चाही थी। मुझसे पूछा गया कि आप कहाँ से बोल रहे हैं। मैंने जवाब दिया कि राजस्थान के उदयपुर से। तब वे बोले कि ठहरिये मैं राजस्थान के प्रभारी से बात करवाता हूँ। यह आपकी सुव्यवस्था का प्रतीक है।

देवपुत्र के प्रकाशन हेतु आपको साधुवाद कि आप आज की विषम परिस्थितियों में भी पूरे मनोयोग से इसको प्राणवान करते जा रहे हैं।

*****

● सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा', कोटा (राज.)

देवपुत्र मई २०१८ का अंक मिला। हार्दिक आभार। आवरण पृष्ठ पर देशी खेलों के चित्र देखकर मन प्रसन्न हो गया। अब स्वास्थ्य के लिए उपयोगी इन खेलों को बच्चे भूलते जा रहे हैं। टी.वी., मोबाईल, इंटरनेट ने बच्चों का बचपन छीन लिया है। अच्छा होता यदि अन्दर के पृष्ठों में इन खेलों की विधियाँ भी दी जाती।

राष्ट्र के चरित्र निर्माण में देवपुत्र का योगदान सराहनीय है। यह देश के भावी कर्णधारों को सुसंस्कार प्रदान कर रहा है। भौतिकता की चकाचौंध में यह नव पीढी को सही राह बताने का बहुत बड़ा उत्तरदायित्व निभा रहा है। इसकी सामग्री बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी प्रदान करती है।

सत्यमेव जयते
ऊर्जा अधोसंरचना दिवस
प्रदेश में नवकरणीय ऊर्जा की कुल 3951 मेगावाट
क्षमता स्थापित (पिछले 6 वर्षों में 8 गुना वृद्धि)
750 मेगावाट की अल्ट्रा मेगा रीवा
सौर परियोजना से उत्पादन शुरु
250
मंदसौर सौर
प्रदेश में स्थापित हरित ऊर्जा परियोजनाओं से
नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री
अपना सूरज, अपनी छत, अपनी बिजली
घरों/कार्यालयों/संस्थाओं में ग्रिड संयोजित
सोलर पावर प्लांट की स्थापना
• 15000 किलोवाट क्षमता के सोलर प्लांट संयंत्र लगाये गये
• नेट-मीटरिंग पर संचालन, 5 वर्षों का निःशुल्क रख-रखाव
• औसत 108 विद्युत यूनिट्स/माह/किलोवाट उत्पादन की गारंटी
• प्रति किलोवाट सिर्फ 100 वर्गफिट छत की आवश्यकता
• 3 से 4 वर्षों में लागत की वापसी
• 30% से 50% तक अनुदान उपलब्ध
• FAR गणना, सम्पत्ति कर से मुक्त
• बैंक से ऋण भी उपलब्ध
मुख्यमंत्री सोलर
खेत-खेत पर
किसानों में खुशहाली
पर्यावरण से हाथ
• 11,796 सोलर पंप लगाए गए
• रिमोट मॉनिटरिंग से कहीं से भी पंप
जा सकता है
• डीजल पंप उपयोग से मुक्ति
• राज्य में अविद्युतीकृत खेतों में
• डी.सी. पंप से सुबह की हल्की
• किसान बने आत्मनिर्भर
• राज्य शासन को बिजली अनुदान में
• बिजली कंपनियों को हानि में बचत
• 3 एच.पी. तक 90% व 5 एच.पी.
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

ट क्षमता की
योजना स्थापित

म.प्र. ऊर्जा विकास निगम द्वारा
राज्य में सौर ऊर्जा आधारित विद्युत
चलित वाहनों की शुरुआत

र्यावरण को 18 करोड़ वृक्ष लगाने के बराबर लाभ

शिवराज सिंह चौहान,
मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

म्प योजना

ा सूरज,
ता सूरज,
ता सूरज

का संचालन देखा

की पुख्ता व्यवस्था
में ही सिंचाई प्रारंभ

चत

र 85% अनुदान उपलब्ध

उजाला योजना

1 करोड़ 70 लाख LED बल्ब वितरित
साल में 343 करोड़ यूनिट्स की बचत
उपभोक्ताओं के बिल में प्रतिवर्ष रु. 2100 करोड की बचत

LED ट्यूबलाईट	LED बल्ब	5 स्टार रेटिंग पंखा
• 20 वाट की LED ट्यूबलाईट, 55 वाट की साधारण ट्यूबलाईट के बराबर रोशनी • बिजली की 64% बचत • 3 वर्ष की रिप्लेसमेंट वारंटी • 4.14 लाख वितरित	• 9 वाट का LED बल्ब, 100 वाट के साधारण बल्ब के बराबर रोशनी • बिजली की 91% बचत • प्रतिदिन 6 घंटे इस्तेमाल पर आधी यूनिट बिजली की बचत • 3 वर्ष के रिप्लेसमेंट वारंटी	• 50 वाट का 5 स्टार रेटिंग पंखा, 100 वाट के साधारण पंखे के बराबर • बिजली की 50% बचत • 2.5 वर्ष की रिप्लेसमेंट वारंटी • 1 लाख वितरित

हरित ऊर्जा, बहेतर ऊर्जा

D-17004

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. आर.पी. सारस्वत** के **नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास** २५४, नया आवास विकास सहारनपुर २४७००१ (उ.प्र.) द्वारा प्रकाशित चार रोचक एवं सरस बाल कविता संग्रह जिनकी कविताओं में बाल मन की चपलता एवं मनोविज्ञान का सुरुचिपूर्ण समायोजन है।

चटोरी चिड़िया
मूल्य ३०/-

नानी का गाँव
मूल्य २५/-

काठ का घोड़ा
मूल्य ३०/-

छुटकी की चुटकी
मूल्य ८०/-

ख्यात बाल साहित्यकार **पवन पहाड़िया** की **चित्रा प्रकाशन** २४२ सर्वधर्म कालोनी, सी–सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल ४६२०४२ (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित मनभावन बाल कविताओं के दो रोचक संग्रह जिनमें संस्कार है देशभक्ति है व मनोरंजन भी।

ऐसी जोत जगाएं
मूल्य ६०/-

समझो मम्मा
मूल्य ६०/-

मीठी मीठी बाल कविताएँ

डॉ. कैलाश सुमन की २५ रोचक एवं बोधक कविताएं।
प्रकाशक– ग्रन्थ भारती, ५/२८८, गली नं. ५, वेस्ट कान्ती नगर, दिल्ली ५२

मूल्य १००/-

भोलू भालू सुधर गया

पवन चौहान की इन्द्रधनुषी रंगों की छटा से सजी कहानियाँ।
प्रकाशक– बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्स., २२ गोदाम, जयपुर ०६ (राज.)

मूल्य १००/-

देवपुत्र पत्रिका के प्रबंध सम्पादक एवं सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **डॉ. विकास दवे** की **अन्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सेवा एवं शोध संस्थान**, ११०६–ए, हाऊसिंग बोर्ड कालोनी, सेक्टर–१०, ए गुरुग्राम १२२००१ (हरि.) द्वारा प्रकाशित दो महत्वपूर्ण बाल कहानी संग्रह।

दादाजी खुद बने कहानी

भारतीयता से ओतप्रोत संस्कार एवं संस्कृति के रंग में रची बसी सम्पूर्ण बहुरंगी एवं चित्रांकित रोचक बाल कहानियाँ

मूल्य २००/-

दुनिया सपनों की

राष्ट्रीय एवं सामाजिक सरोकारों को सुदृढ़ करती बाल मनोवैज्ञानिक धरातल पर संस्कारों के रंग सजाती कहानियाँ।

मूल्य ५०/-

देश हुआ कैसे आजाद?

कविता : शंकर सुल्तानपुरी

आओ बच्चो! यह बतलाएँ-
देश हुआ कैसे आजाद!
कैसे-कैसे दिन देखें हैं!
आज करें हम उनको याद।
हरा-भरा, जन-धन से पूरित,
अपना यह सुन्दर बागीचा।
जिसे हमारे पूर्वजों ने-
अपने कर्म-लहू से सींचा।
सोने की चिड़िया कहलाया,
सबकी इस पर नजर गड़ी थी।
गौरव-गरिमा से मदमाती,
भारत माता मान मढ़ी थी।

अंग्रेजों का मन ललचाया,
खोटी नीयत लेकर आए।
वे बन बैठे घर के मालिक,
हम अपने घर हुए पराए।
फिरंगियों का जोर-जुल्म था,
हम पर करते थे वे राज।
हम गुलाम थे उतर गया था,
भारत माता का सरताज।
कब तक सहते! इक दिन भड़का-
शोला सहसा आजादी का!
चमक उठी अनगिनत मशालें,
छूटा साहस उन्मादी का।
प्यारे बच्चो! सारा भारत!
गूँज उठा ऊँचे नारों से।
आजादी अधिकार हमारा
बलिदानों के उद्गारों से।
एक चाह थी, एक राह थी,
एक देश था, एक भाव था।
देश-भक्ति की बलिवेदी पर-
आजादी ही प्रबल चाव था।
कितने शीश चढ़े सूली पर!
कमी न आई बलिदानों की!
गिनती करना सहज नहीं है!
आजादी के दीवानों की।
याद '४२ का विप्लव' है-
'अंग्रेजो अब भारत छोड़ो।'
'करो मरो' का गूँजा नारा-
अन्यायों की कारा तोड़ो!
इतनी-इतनी दी कुर्बानी!
तब पायी हमने आजादी।
कितनो ने काला-पानी में,
अपनी सारी उमर बिता दी।
यह आजादी रहे सुरक्षित!
यह जन-गण-मन मंगलदायक।
भारत माता की जय बोलें।
बनें देश के उज्जवल नायक।

● लखनऊ (उ.प्र.)

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२० आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

www.mitva.in

mitva
Naya Daur - Nayi Raunak

मितवा की बढ़ती रेंज
से बढ़ाएं घर की रौनक!

अब मितवा सोलर रेंज के साथ
रौशन करें अपना घर, दुकान,
अस्पताल व स्कूल।

RAL
(विप्पो के को-प्रोमोटर)
प्रस्तुत करते हैं

मितवा
पोर्टेबल सोलर रेंज
• सोलर लाइट • सोलर लैंटर्न
• सोलर फैन

वितरक या विक्रेता बनके जुड़ें मितवा के सौर ऊर्जा दौर के साथ, अपनी आय को दें नई ऊँचाई, कॉल करें:
1800 1038 222 (सोमवार से शनिवार, 9:30 AM से 6 PM)

RAL
Global brands. Built on trust.

RAL Consumer Products Ltd. B-7/2, Okhla Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110020
Toll Free No.: 1800 1038 222 | Email : info@ral.co.in | www.ralindia.co.in

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित प्रधान सम्पादक – कृष्णकुमार अष्ठाना